वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

जून 16-30, 2025

हिन्दू विश्व

राम विरोधियों की बेचैनी और

राम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा

एक साँस्कृतिक पुनर्जागरण का क्षण

@eHinduVishwa

/HinduVishwa

बाराबंकी (उ.प्र.) में अवध प्रांत के दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते
विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराडे तथा वर्ग में उपस्थित शिक्षार्थी

भोजपुर (बिहार) में बजरंग दल के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते
विहिप-केंद्रीय प्रबन्ध समिति के सदस्य जीवेश्वर मिश्र जी, मंचस्थ प्रांत के पदाधिकारी तथा उपस्थित प्रशिक्षार्थी

इन्द्रप्रस्थ प्रांत के दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में
उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी

श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर में श्रीरामदरबार की प्राण प्रतिष्ठा के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का जन्मदिवस भी मनाया गया

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

16-30 जून, 2025

आषाढ़ कृष्ण पक्ष - शुक्ल पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

हे इन्द्रदेव ! आप शत्रुओं पर चारों ओर से आक्रमण कर उन्हें विनष्ट करें। आपका अनुपम शक्तिशाली वज्र और शक्ति, शत्रुओं का सिर झुकाने वाले हैं। आप अपने अनुकूल स्वराज्य की कामना करते हुए वृत्र का वध करें और विजय प्राप्त करके जल प्राप्त करें (वर्षा के अवरोध को दूर करके वर्षा करें)।

- सामवेद

आतंकवाद के विरुद्ध भारत का पक्ष रखने 33 देशों में गए 59 सांसद	05
'आई एस आई' : आतंकवाद का पोषक	08
कठमुल्लों को रौंदने वाले चीन की शरणागति क्या इस्लाम में जायज है?	10
वीर सावरकर, विज्ञान, वेद और डॉ. अंबेडकर से उनका संबंध	11
शौर्य साधना सृजन व त्याग की प्रतिमूर्ति माता अहिल्याबाई होलकर	13
असंतुलित रिलीजीयस जनसँख्या वृद्धि भारत समेत वैश्विक समस्या	14
भारत की कूटनीति से 60 साल बाद मॉरीशस को मिला चागोस द्वीपसमूह	20
राष्ट्रवाद के दौर में राहुल की जातिवादी राजनीति	22
मैं हिन्दू मैं श्रेष्ठ हूँ, सब धर्मों में ज्येष्ठ हूँ	23
शहतूत का फल है गुणकारी	24
भोजपुर (बिहार) में बजरंग दल का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग	25
बकरीद के नाम पर हिंसा, क्रूरता व अवैध गतिविधियों पर लगे विराम : डॉ सुरेंद्र जैन	26

सुभाषित

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा।।

जिस प्रकार एक सुन्दर पुष्पित एवं सुगन्धित वृक्ष से सारा उपवन सुरभित हो उठता है, उसी प्रकार कुल में उत्पन्न कोई एक सन्तान ही प्रतिष्ठा में श्रीवृद्धि कर देता है।

राम विरोधियों की बेचैनी और
राम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा
एक साँस्कृतिक पुनर्जागरण का क्षण

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

22 जनवरी 2024 का दिन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में अंकित हो गया, जब श्रीराम जन्मभूमि पर श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा संपन्न हुई। यह न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान था, बल्कि एक संघर्षशील सभ्यता के स्वाभिमान की पुनर्स्थापना भी थी। रामलला का गर्भगृह में विराजमान होना करोड़ों हिंदुओं की आत्मा का उत्थान था।

और अब, इसी क्रम की अगली कड़ी के रूप में भव्य राम मंदिर के प्रथम तल पर "राम दरबार" की प्राण–प्रतिष्ठा हो चुकी है– एक ऐसा महत्त्वपूर्ण चरण, जो श्रीराम के व्यक्तिगत रूप से पारिवारिक, सामाजिक और राजसी रूप को सामने लाता है। लेकिन जितना यह धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से हर्ष का विषय है, उतना ही कुछ राम–विरोधी मानसिकता के लोगों के लिए चिंता और कष्ट का कारण बना हुआ है। सनातन धर्म की परंपरा में "प्राण–प्रतिष्ठा" का अर्थ है– किसी विग्रह में दैवी चेतना का आवाहन, उसे केवल मूर्ति नहीं, साक्षात देवता के रूप में जागृत करना। शास्त्रों के अनुसार –

"प्राणो हि जीवनं तस्य, प्रतिष्ठा च तदर्थिनी।"

यानि प्राण ही जीवन है, और प्रतिष्ठा उसका स्थायित्व है।

22 जनवरी को जब रामलला को गर्भगृह में विराजमान किया गया, तब यह "एकाकी बालक राम" की प्रतिष्ठा थी। अब प्रथम तल पर राम दरबार में राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान जी सहित परिवार सहित राम का राजसी स्वरूप प्रतिष्ठित हुआ है। यह केवल धार्मिक नहीं, बल्कि संस्कार, सामाजिक संतुलन और कर्तव्यनिष्ठ शासन का आदर्श प्रस्तुत करता है। राम की प्राण–प्रतिष्ठा के विरोध के स्वर केवल आज नहीं उठे। जब राम जन्मभूमि आंदोलन प्रारंभ हुआ, तभी से तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के झंडाबरदार इसे "सांप्रदायिक उन्माद" कहने लगे। 22 जनवरी को भी यही स्वर सुनाई दिए– "यह संविधान का उल्लंघन है", "यह धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध है" आदि। और अब जब राम दरबार की प्राण–प्रतिष्ठा हो रही है, फिर वही स्वर– "यह सरकार की धार्मिकता का प्रदर्शन है", "हिंदू राष्ट्र की ओर खतरनाक झुकाव है"।

परंतु प्रश्न यह है – क्या भारत के बहुसंख्यकों की भावनाएँ "धर्मनिरपेक्षता" की बलि चढ़ जाएँ? क्या अपने आराध्य के मंदिर निर्माण का उत्सव मनाना राजनीति माना जाएगा? वास्तव में, यह विरोध "राम" से नहीं है–यह विरोध राम के माध्यम से हिंदू अस्मिता की पुनर्प्रतिष्ठा से है। राम दरबार में विराजमान श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान–केवल पात्र नहीं, संस्कारों के प्रतीक हैं। राम–मर्यादा, सीता–शील, लक्ष्मण–सेवा, भरत–त्याग, शत्रुघ्न–अनुशासन और हनुमान–निष्ठा का मूर्तरूप हैं। यह दरबार एक हिंदू परिवार की समग्र परिकल्पना है, जहाँ धर्म, न्याय, कर्तव्य और प्रेम एक साथ उपस्थित हैं। इस प्रतिष्ठा से केवल एक धार्मिक प्रतिमा नहीं जुड़ी, पूरी सनातन व्यवस्था का एक जीवंत दर्शन प्रस्तुत हुआ है। भारत के इतिहास में मंदिर कभी केवल पूजा–स्थल नहीं रहे–वे शिक्षा, नीति, न्याय, कला, स्थापत्य और सामाजिक जीवन के केंद्र रहे हैं। अयोध्या में राम दरबार की प्रतिष्ठा, इस परंपरा को नए युग में पुनः जीवंत कर रही है।

राम दरबार की प्रतिष्ठा से एक संदेश स्पष्ट है–अब हिंदू समाज आत्महीन नहीं, वह अपने मूल्यों, अपने प्रतीकों, अपने तीर्थों और अपने आराध्यों के प्रति गौरव और निष्ठा से खड़ा है। यह प्राण प्रतिष्ठा हिंदुओं के लिए आत्मगौरव का महायज्ञ है। राम मंदिर की प्रत्येक प्राण–प्रतिष्ठा–चाहे वह बालक रूप रामलला की हो या राजसी राम दरबार की–केवल अनुष्ठान नहीं, हिंदू चेतना की प्रतिष्ठा है।

यह दरबार एक हिंदू परिवार की समग्र परिकल्पना है, जहाँ धर्म, न्याय, कर्तव्य और प्रेम एक साथ उपस्थित हैं। इस प्रतिष्ठा से केवल एक धार्मिक प्रतिमा नहीं जुड़ी, पूरी सनातन व्यवस्था का एक जीवंत दर्शन प्रस्तुत हुआ है। भारत के इतिहास में मंदिर कभी केवल पूजा–स्थल नहीं रहे–वे शिक्षा, नीति, न्याय, कला, स्थापत्य और सामाजिक जीवन के केंद्र रहे हैं। अयोध्या में राम दरबार की प्रतिष्ठा, इस परंपरा को नए युग में पुनः जीवंत कर रही है।

आतंकवाद के विरुद्ध भारत का पक्ष रखने
33 देशों में गए 59 सांसद

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

पाकिस्तान ने भारत में आतंकवादियों को भेजकर 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में आतंकी आक्रमण करवाया, जिसमें 27 हिन्दू पुरूषों की धर्म पूछकर हत्या कर दी गई। विवाह के बाद हनिमून मनाने गए जोड़ों को चुन–चुनकर उनका धर्म पुछकर उन्हें मार दिया गया, उनकी पत्नियों को यह कहकर जीवित छोड़ दिया गया कि जाकर मोदी को बता देना। इन 27 हिन्दुओं में एक नेपाल का हिन्दू था।

आतंकियों की सहायता अनेक स्थानीय लोगों ने की थी, हथियारों की आपूर्ति में, भोजन–राशन उपलब्ध कराने में, छुपने की जगह बताने में, आवागमन में, योजना बनाने में, आतंकी वारदात को अंजाम देने में, टूरिस्ट्स को मिसगाईड करके बैसरन घाटी में लाने में, वहाँ का पुरा बाजार सजाने में, ऐसे अनेक काम थे, जो स्थानीय लोगों ने ही किया।

जो–जो लोग आतंकियों की सहायता में संलिप्त थे, उन सभी की पहचान की गई, उनको या तो गिरफ्तार किया गया, या फिर जो आक्रामक तरिके से पेश आए, सुरक्षाबलों पर गोलीबारी की कोशिश की, उनका इंकाउंटर करना पड़ा, कई आतंकी फरार थे और अपराध संगीन था, तो उनके घरों पर बुलडोजर भी चलाए गए, अभी भी सर्च ऑपरेशन लगातार चल रहा है। घुसपैठ पर अंकुश लगाया गया है, आतंकियों की तलाश और गिरफ्तारी हो रही है, इंकाउंटर भी चल रहा है। अब पाकिस्तान या किसी भी देश के द्वारा कराए गए आतंकी आक्रमण को भारत पर आक्रमण घोषित कर दिया गया है, इस नीति के अंतर्गत अब यदि कोई आतंकी घटना घटती है, तो घटना में लिप्त देश पर सीधा आक्रमण किया जाएगा।

पहलगाम की घटना के बाद ऑपरेशन सिन्दूर के अंतर्गत 6–7 मई 2025 की रात्री को पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों पर भारतीय सेना ने मिसाइलों से हमला करके उनको नष्ट कर दिया। अपने फाइटर प्लेन्स को भारतीय सीमा में रखते हुए उनसे मिसाइल दागे और एक मीटर की सटीकता से हमला किया गया। आसपास में कोई भी छति नहीं हुई ऐसा सधा हुआ हमला किया। इन हमलों में 150 के लगभग आतंकवादी मारे गए। अजहर मसूद और हाफिज सईद के परिवार के लगभग सभी लोग मारे गए। बड़ी सँख्या में शीर्ष के आतंकी मारे गए।

इस भारतीय हमले के बाद पाकिस्तान ने भारत के कई बड़े शहरों, मन्दिरों, गुरुद्वारों, चर्चों, सैन्य ठिकानों, एयरबेस पर हमले की कोशिश की। उसके सारे हमले भारत के मजबूत एयर डिफेंस सिस्टम के बलपर नष्ट कर दिए गए गए। पाकिस्तान के द्वारा दागे गए चायनीज मिसाइल, चायनीज और अमेरिकी फाइटर प्लेन्स, टर्कीश ड्रोन सब उड़ा दिए गए। पाकिस्तान का कोई भी हमला सफल नहीं होने दिया गया। पाकिस्तान ने सीमावर्ती गाँवों पर जो मोर्टार से गोले दागे, उससे कई गाँवों को नुकसान हुआ, कई नागरिक मारे गए, कुछ सैनिक बलिदान हुए।

पाकिस्तान के इन आक्रमणों के प्रयत्न का भरपुर जबाब दिया गया और पाकिस्तान की परमाणु सुविधाओं से सम्पन्न नूर खान एयर बेस ओर सरगोधा एयरबेस समेत उसके 11 एयरबेस को

पुरी तरह ध्वस्त कर दिया गया, इतना डैमेज कर दिया गया कि कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम पूरी तरह ध्वस्त हो गया, एयर ऑपरेशन सम्भव ही नहीं रह गया। उनके डिफेंस सिस्टम को पुरी तरह ध्वस्त कर दिया गया। अनेक विमान रनवे पर ही ध्वस्त कर दिए गए, कुछ मिसाइल आक्रमण से नष्ट किए गए, कुछ डिफेंस सिस्टम द्वारा मार गिराये गए, तो कुछ भारतीय विमानों से डॉग फॉईट में नष्ट हुए। तीन दिनों (8–9–10 मई) के भारतीय आक्रमण में पाकिस्तान पुरी तरह हवाई आक्रमण के लिए अयोग्य हो गया।

पाकिस्तान 22 अप्रैल से ही सीजफायर उल्लंघन करते हुए सीमा पर लगातार गोलीबारी कर रहा था, भारत को लगातार उकसाने की कोशिश कर रहा था कि हम सीमा पर बड़े स्तर पर गन बैटल में कूद पड़ें, लेकिन हमारी सेना ने संयम से काम लिया, हमने नो कांटेक्ट वार की तैयारी किया था, पाकिस्तान हमें गन बैटल का निमंत्रण दे रहा था, हम उसको सीमित उत्तर देते रहे, उसको सीमापर भी डेमेज करते रहे, उसके सैनिक बंकर छोड़कर भाग जाते थे, हमने उनके अनेक बंकर नष्ट भी कर दिए थे।

अब पाकिस्तान का डीजीएमओ फोन करके हमारे डीजीएमओ से गिड़गिड़ाने लग गया, हमला रोकने के लिए। हम भी युद्ध नहीं चाहते थे, हमने तो आतंकी अड्डों पर हमला किया था, पाकिस्तान पिछले सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट एयर स्ट्राइक की भांति यदि जबाबी आक्रमण नहीं करता, तो हम भी आक्रमण नहीं करने वाले थे। पाकिस्तान ने हमपर आक्रमण किया, तो हमने भी उसपर आक्रमण किया। और ऐसा मारा कि चीन, टर्की और अमेरिका को पाकिस्तान से अधिक चोट लगी।

अब इन तीन दिवसीय भारतीय हमले के बाद अमेरिकी मीडिया ने पाकिस्तान के लुच्चे–टुच्चे नेताओं के झूठे बयानों के आधार पर पाकिस्तान के पक्ष में नैरेटिव चलाना शुरू कर दिया। यहा काम पाकिस्तान का साथ देने के लिए टर्की, अजरबैजान और चीन ने भी शुरू कर दिया। भारत में पाकिस्तान के पक्षधर लोगों ने भी इस प्रोपेगेंडा के पक्ष में अपना सुर मिलाना शुरू कर दिया। तब आवश्यक हो गया कि सम्पूर्ण जगत को इन भारतीय हमलों के बारे में यथार्थ बताया जाए।

ऐसे में भारत ने सभी दलों के सांसदों को मिलाकर 7 प्रतिनिधिमंडल बनाए, उनको दुनियाँ के महत्वपूर्ण देशों में भेजा गया, भारत का पक्ष रखने के लिए। भारत पर आतंकी हमला पाकिस्तान ने करवाया, आतंकियों ने धर्म पुछकर हत्या की, पाकिस्तान लगातार अनेक दशकों से भारत पर आतंकवादी हमले करता रहा है, यही अब भी कर रहा है, पाकिस्तान ने हमारे जम्मू–कश्मीर के एक बड़े हिस्से पर कब्जा किया हुआ है, जब हमने उसके आतंकी अड्डों पर हमला किया तो, पाकिस्तान उनके पक्ष में हमपर हमला करने लग गया, इसका मतलब वहाँ के आतंकवादी नान स्टेट एक्टर्स नहीं हैं, जैसा पाकिस्तान कहता आया है। पाकिस्तान के पुलिस अधिकारी और सेना के अधिकारी अपनी वर्दी में आतंकवादियों को पाकिस्तानी झंडे में लपेटकर उनकी अंतिम क्रिया कर रहे हैं। इसका मतलब आतंकवाद पाकिस्तान का सरकारी प्रोग्राम है। आतंकवाद वहाँ की सेना, सरकार और आईएसआई का संयुक्त उपक्रम है, यह सब बातें दुनियाँ को बताना बहुत जरूरी हो गया था।

7 प्रतिनिधिमंडल में 59 सांसद 33 देश गए

समुह 1

देश – सउदी अरब, कुवैत, बहरीन, अल्जीरिया।

नेतृत्व – बैजयंत पांडा (भाजपा सांसद)।

सदस्य – डॉ निशिकांत दुबे (भाजपा सांसद), फंगनन कोन्याक (भाजपा सांसद), रेखा शर्मा (भाजपा सांसद), असदुद्दीन ओवैसी (AIMIM सांसद), सतनाम सिंह संधु (मनोनीत), गुलाम नवी आजाद (DPAP प्रमुख) और हर्ष श्रृंगला (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 24 मई। वापसी तिथी– 3 जून।

समूह 2

देश – यूके, फ्रांस, जर्मनी, ईयू, इटली, डेनमार्क।

नेतृत्व – रवि शंकर प्रसाद (भाजपा सांसद)।

सदस्य – डॉ दग्गुबाती पुरंदेश्वरी (भाजपा सांसद), समिक भट्टाचार्य (भाजपा सांसद), प्रियंका चतुर्वेदी (UBT सांसद), डॉ अमर सिंह (कॉंग्रेस सांसद), गुलाम अली खटाना (मनोनीत सांसद), एम जे अकबर (मनोनीत सांसद) और पंकज सारण (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 25 मई। वापसी तिथी– तिथी तय नहीं।

समूह 3

देश – इंडोनेशिया, मलेशिया, कोरिया गणराज, जापान, सिंगापुर।

नेतृत्व – संजय कुमार झा (जदयू सांसद)।

सदस्य – अपराजिता सारंगी (भाजपा सांसद), यूसुफ पठान (टीएमसी सांसद), बृजलाल (भाजपा सांसद), डॉ जान ब्रिटास (सीपीआईएम सांसद), प्रदान बरूआ (भाजपा सांसद), डॉ हेमांग जोशी (भाजपा सांसद), सलमान खुर्शीद (कॉंग्रेस नेता) और मोहन कुमार (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 21 मई। वापसी तिथी– तिथी तय नहीं।

समूह 4

देश – संयुक्त अरब अमीरात, लाइबेरिया, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, सिएरा लियोन।

नेतृत्व – श्रीकांत एकनाथ शिंदे (शिवसेना सांसद)।

सदस्य – बांसुरी स्वराज (भाजपा सांसद), ईटी मोहम्मद बशीर (IUML सांसद), अतुल गर्ग (भाजपा सांसद), डॉ सस्मित पात्रा (बीजेडी सांसद), मनन कुमार मिश्र (भाजपा सांसद), एस एस आहलुवालिया (भाजपा नेता) और सुजन चिनॉय (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 21 मई। वापसी तिथी– तिथी तय नहीं।

समूह 5

देश – यूएसए, पनामा, गुयाना, ब्राजिल, कोलम्बिया।

नेतृत्व – शशि थरूर (काँग्रेस सांसद)।

सदस्य – साम्भवी (एलजेपी–रामविलास सांसद), डॉ सरफराज अहमद (जेएमएम सांसद), एम हरीश बालयोगी (जीटीडीपी), शशांक मणि त्रिपाठी (भाजपा सांसद), भुवनेश्वर कलिता (भाजपा सांसद), मिलिंद मुरली देवड़ा (शिवसेना सांसद), तेजस्वी सूर्या (भाजपा सांसद) और तरणजीत सिंह संधु (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 24 मई। वापसी तिथी– तिथी तय नहीं।

समूह 6

देश – स्पेन, ग्रीस, स्लोवेनिया, लातविया, रूस।

नेतृत्व – कनिमोझी करूणानिधि (डीएमके सांसद)।

सदस्य – राजीव राय (सपा सांसद), मियां अल्ताफ अहमद (एनसी सांसद), कैप्टन ब्रिजेश चौटा (भाजपा सांसद), प्रेम चंद गुप्ता (आरजेडी सांसद), डॉ अशोक कुमार मित्तल (आप सांसद), मंजीत एस पुरी (राजदूत) और जावेद अशरफ (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 22 मई। वापसी तिथी– तिथी तय नहीं।

समूह 7

देश – मिश्र, कतर, इथियोपिया, दक्षिण अफ्रिका।

नेतृत्व – सुप्रिया सुले (एनसपी– एससीपी सांसद)।

सदस्य – राजीव प्रताप रुढ़ी (भाजपा सांसद), विक्रमजीत सिंह साहनी (आप सांसद), मनीष तिवारी (काँग्रेस सांसद), अनुराग सिंह ठाकुर (भाजपा सांसद), लावु श्रीकृष्ण देवरायलु (टीडीपी सांसद), आनंद शर्मा (काँग्रेस नेता), श्री वी मुरलीधरन (पूर्व विदेश राज्य मंत्री) और सैयद अकबरूद्दिन (राजदूत)।

प्रस्थान तिथी– 24 मई। वापसी तिथी– तिथी तय नहीं।

59 सांसद ने दुनियाँ को 5 संदेश दिए

आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस – ऑपरेशन सिंदूर आतंकी गुटों और उनके ढांचों के खिलाफ था। आतंकी अड्डों को नपी–तुली कार्रवाई में निशाना बनाया गया। पाक सेना ने इसे खुद के खिलाफ हमला माना और पलटवार किया।

पाक आतंक का समर्थक – सांसद कुछ सबूत लेकर गए, उन्होंने बताया कि पहलगाम हमले में पाक समर्थित आतंकी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (TRF) की भूमिका थी। इससे पहले हुए हमलों का भी पूरा चिट्ठा सांसद लेकर गए।

भारत जिम्मेदार और संयमित – भारत ने सैन्य कार्रवाई में भी जिम्मेदारी और संयम का परिचय दिया। यह सुनिश्चित किया कि पाक के किसी निर्दोष नागरिक की जान न जाए। पाक ने कार्रवाई रोकने का जब आग्रह किया तो भारत ने उसे तत्परता से स्वीकारा।

आतंक के खिलाफ विश्व एकजुट हो : सांसदों ने इन देशों से आतंकवाद के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने और इससे निपटने के लिए सहयोग व समर्थन भी मांगा। अपील किया कि भारत–पाक के विवाद को आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध के तौर पर देखें।

पाक को लेकर हमारी नीति : यह बताया कि पाक के खिलाफ भारत ने अपना बदला हुआ दृष्टिकोण उजागर किया है। भारत सीमा पार से पैदा होने वाले खतरे को लेकर उदासीन रहने के बजाए प्रो–एक्टिव रवैया अपनाएगा और आतंकी हमलावरों को पहले ही निष्क्रिय करेगा।

राजनीति से ऊपर है देश

भारत के विभिन्न दलों के नेता, देश का आतंकवाद के विरुद्ध नीतिगत संदेश लेकर दुनियाँ के अनेक देशों में गए, सबने देश को सर्वोपरि रखा। भारत में रहते हुए ये सभी नेता एक दूसरे के विरुद्ध टीका टिप्पणी करते रहते हैं। विरोध और समर्थन तो लोकतंत्र का अनिवार्य अंग है। यह चलता रहता है और सदा चलता ही रहेगा, लेकिन जब देश की बात आई, तो इन सांसदों और नेताओं के व्यवहार से देश का एक–एक नागरिक गौरवान्वित अनुभव कर रहा है, इन सांसदों के व्यवहार से देश गौरवान्वित हुआ। शशि थरूर से किसी ने उनकी पार्टी के प्रति उनकी निष्ठा पर प्रश्न किया, तो उन्होंने साफ किया कि जैसे ही हम देश की सीमा पार करते हैं, तो हम सिर्फ भारतीय रह जाते हैं। देश को जब जरूरत होती है, तब देश का पक्ष रखने में पार्टी बाधा नहीं रहती है। पार्टी का काम अलग है और देश का काम अलग है। थरूर ने कहा कि जो लोग राष्ट्र का काम करने को पार्टी विरोधी गतिविधी मानते हैं, उन्हें स्वयं से सवाल करना चाहिए।

उनसे यह भी सवाल किया गया कि क्या आप पार्टी छोड़ने वाले हैं? तो उन्होंने कहा कि जब आप देश की सेवा कर रहे हों, तब ऐसी बातों की परवाह नहीं करनी चाहिए। हमारे राजनीतिक मतभेद भारत की सीमा के बाहर जाते ही खत्म हो जाते हैं। सीमा पार करते ही हम पहले भारतीय होते हैं।

इंडोनेशिया में सलमान खुर्शीद ने कहा कि पाकिस्तान के डीजीएमओ ने जब भारत के डीजीएमओ को फोन कर के आक्रमण रोकने का आग्रह किया, तो हमने हमले रोके। यही सच है बाकि सब बात बकवास है। खुर्शीद ने बहुत सरल भाषा में ट्रम्प के दावे को बिना कुछ कहे खारिज कर दिया।

असदुद्दीन ओवैसी की वाकपटुता ने भी देश का नाम रौशन किया। सभी प्रतिनिधियों की राष्ट्रनिष्ठा ने देश के विरुद्ध बनाये गए सारे भ्रमों का निवारण कर दिया और सभी भारत विरोधी लोगों का नैरेटिव्स ध्वस्त कर दिया। इस भ्रम के धुंध को छांटने की नियत से ही ये प्रतिनिधिमंडल बाहर भेजे गए थे, भारत का उद्देश्य शत–प्रतिशत सफल रहा।

भारत में रहते हुए ये सभी नेता भले ही विपक्ष की भूमिका में मोदी को और सरकार को गरियाते रहे हों, आलोचना–समालोचना करते रहे हों, लेकिन जब देश ने इनको स्मरण किया, देश का पक्ष विदेशों में रखने के लिए दायित्व दिया, उनको इस महत्वपूर्ण काम के लिए नियुक्त किया, तो इनमें से सभी ने देश को गौरवान्वित कर दिया।

'आई एस आई' आतंकवाद का पोषक

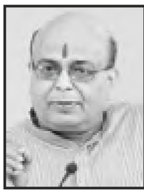

विनोद कुमार सर्वोदय

अधिक पीछे न जाते हुए केवल पिछले 2–3 वर्षों की गुप्तचर विभाग की सूचनाओं में आई.एस.आई द्वारा हमारे देश में आतंकवादियों को उकसाने व भड़काने के महत्वपूर्ण समाचार आये थे। जिससे राष्ट्रीय पत्रकारिता के सकारात्मक संकेत मिलने से मीडिया जगत की अनेक भ्रांतियाँ दूर हुई। साथ ही केंद्रीय सत्ता में परिवर्तन से भी समाज में एक सकारात्मक वातावरण बनने से उसमें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध जागा है।

मुगलकालीन इतिहास को अलग करते हुए वर्तमान में पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था 'इंटर सर्विसेस इंटेलिजेंस' (आई.एस.आई.) द्वारा पोषित जिहाद रूपी मुस्लिम आतंकवाद की गंभीर समस्या से देश पिछले लगभग 46 वर्षों से जूझ रहा है। आई.एस.आई. बाँग्लादेश के निर्माण (1971) से ही जिहाद के लिए अपने एजेंटों द्वारा भटके हुए कट्टरपंथी मुसलमानों को लोभ व लालच देकर अनेक साधनों व विभिन्न माध्यमों से बहका कर देश के विभिन्न क्षेत्रों में धीरे–धीरे अपने स्लीपिंग सेल बनाने में सफल होती आ रही है। बाँग्लादेश के निर्माण व अपनी हार से विचलित होकर उस समय (1971) पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने ही आई.एस.आई. का दुरुपयोग भारत के पंजाब, कश्मीर में अलगाववाद व आतंकवाद बढ़ाने में किया। आई.एस.आई. के सुझाव पर जनरल जिया उल हक को योग्य आधिकारियों की अवहेलना करते हुए भुट्टो ने सेना का मुखिया बनाया था। बाद में जिया उल हक पाक के राष्ट्रपति बने, तो, उन्होंने देश में मुस्लिम कट्टरता को बढ़ावा देते हुए 'ईश निंदा कानून' भी बनाया और उसी जिहादी मानसिकता व बदले की भावना के वशीभूत आई.एस. आई. के माध्यम से भारत को एक न खत्म होने वाले छद्म युद्ध में धकेल दिया, जो अभी तक जारी है।

इसी भारत विरोध (हिन्दू विरोध) व कश्मीर को जीतने के प्रचार से पाकिस्तानी जनता को लुभाते रहकर जिया उल हक व आगे आने वाले अन्य शासक भी वहाँ सरकार चलाते रहे। इन सबसे आई.एस.आई. सेना व सरकार से भी अधिक शक्तिसम्पन्न होती चली गयी। जिया उल हक ने आई.एस.आई. को नशीले पदार्थों व हथियारों का अवैध व्यापार करवाने में भी सहयोग किया। सन 90 के दशक के समाचारों के अनुसार ही आई.एस.आई. द्वारा लगभग 80 आतंकवादी प्राशिक्षण केंद्र अफगानिस्तान सहित पाक व पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में चलाये जा रहे थे। 1984 में कश्मीर की कथित आजादी के लिए वहाँ जंग छेड़ी गयी और 1990 में तो हिंसा का भरपूर नंगा नाच हुआ। उस समय 123 आतंकवादी संगठन कश्मीर में काम कर रहे थे और विभिन्न पाकिस्तानी संगठनों द्वारा करोड़ों रुपयों की सहायता भेजी गयी थी, इस सब में सर्वाधिक योगदान आई.एस.आई. का ही रहा था।

1992 की एक अमरीकी रिपोर्ट के संदर्भ से कश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन जी की किताब 'माय फ्रोजन ट्रॉब्लेंस इन कश्मीर' के तृतीय संस्करण से ज्ञात होता है कि आई.एस.आई. के पास उस समय लगभग 3 अरब अमरीकी डॉलर की विराट पूँजी थी, जो कि पाकिस्तान के रक्षा बजट से भी 5 गुना अधिक थी और वह अधिकांश नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार से ही कमाई गयी थी। वह सिलसिला अभी भी जारी है और उसमें नकली करेंसी व अवैध हथियारों के व्यापार से तो अब और न जाने कितने अरब डॉलरों की सम्पदा द्वारा वह अनेक जिहादी योजनाओं को अंजाम देने में लगी हुई है। आज सम्पूर्ण भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आई.एस.आई. ने अपने एजेंटों व कट्टरपंथी मुसलमानों द्वारा आतंकवादी संगठनों का भरपूर जाल फैला रखा है।

पूर्व में भी गुप्तचर विभाग की रिपोर्टों के आधार पर आये समाचारों से यह भली भाँति ज्ञात होता रहा है कि आई.एस.आई. ने अनेक आतंकवादी

संगठनों के बल पर हजारों दंगे व सैकड़ों बम विस्फोटों द्वारा भारत में दहशतगर्दी फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। कश्मीर का लगभग हिन्दू विहीन होना आई.एस.आई. के दुःसाहस का स्पष्ट प्रमाण है।

आई.एस.आई. ने लगभग चार दशक में हमारे देश के हजारों सुरक्षाकर्मियों व निर्दोषों के लहू को बहाने के अतिरिक्त अरबों रुपये की सरकारी व व्यक्तिगत सम्पतियों को नष्ट किया है। ऐसे में सैकड़ों आतंकवादियों की धरपकड़ भी हुई और मारे भी गए। सैकड़ों की सँख्या में इनके एजेंट भी विभिन्न स्थानों से समय–समय पर हमारे सुरक्षाकर्मियों द्वारा पकड़े भी जाते रहे हैं। साथ ही साथ सैकड़ों/हजारों की सँख्या में वैध वीजा पर भारत आये पाकिस्तानी नागरिक वीजा अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी यहीं छिप कर रह रहे हैं, यह भी कमोवेश आईएसआई के ही षडयंत्र का ही एक भाग हो सकता है।

नवीन समाचारों के अनुसार मुस्लिम आतंकवादी संगठन 'इंडियन मुजाहिद्दीन' को अब आई.एस.आई. देश में दंगे फसाद व बम ब्लास्ट आदि से दहशत फैलाने के लिए स्वयं आर्थिक सहायता न करके उनको विभिन्न अपराधों जैसे अपहरण, फिरौती व लूटपाट आदि से धन जुटाने के लिए उकसा रही है।

याद रहे कि इन मुस्लिम आतंकवादियों को अब तक आई.एस. आई. व लश्कर–ए–तैयबा भारी मात्रा में हथियार, विस्फोटक व अन्य आर्थिक सहायता देती आ रही थी। गुप्तचर विभाग के अनुसार इंडियन मुजाहिदीन का मासिक बजट 50 करोड़ से 150 करोड़ रूपये के लगभग होता था। अब कुछ वर्षों से ये संगठन उनके अनुसार जिहादी गतिविधियों को कार्यरूप नहीं दे पा रहे हैं, तो उन्होंने इनके बजट में कटौती की है साथ ही आई.एस.आई. ने यह सन्देश भी दिया है कि अगर वे (इंडियन मुजाहिदीन) उनके मंसूबे (भयानक जिहादी घटनाओं द्वारा तबाही) को भारत में अंजाम देने में सफल हुए, तो, वे उनके बजट की भरपाई पूरी कर देंगे।

केंद्र में मोदी जी की सशक्त सरकार बनने के बाद आतंकियों के विरुद्ध सुरक्षा बलों की अत्यधिक सजगता के कारण आतंकी आक्रमणों के कुचले जाने से आई.एस.आई. व पाकपरस्त आतंकी संगठनों की बेचैनी बढ़ गयी है। इसीलिए ये सब एकजुट होकर और कुछ सिख आतंकी संगठनों का साथ लेकर भारत के विभिन्न भागों में अपने जिहादी षडयंत्रों को अंजाम देने के कोई भी अवसर छोड़ना नहीं चाहते। इसके लिए आवश्यक निर्देशों के अतिरिक्त आर्थिक सहायता भी इन संगठनों को आई.एस.आई. उपलब्ध कराती है।

इससे यह तो स्पष्ट ही होता है कि पाकिस्तान किसी भी प्रकार से जिहाद के लिए भारत में अपनी आतंकवादी गतिविधियों से पीछे हटना नहीं चाहता। क्योंकि वह हमारे देश को हजार घाव देने की मानसिकता से बाहर निकलना नहीं चाहता, इसलिए वह अपनी गुप्तचर संस्था आई.एस. आई. को सक्रिय किये रखता है। परिणामस्वरूप प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पाक गुप्तचर एजेंसी सिखों के वेश में आतंकियों को तैयार करके हमारे देश में बड़े पैमाने पर आतंकी घटनाओं द्वारा दहशत फैला कर पूर्व की भाँति (1980 के लगभग) हिन्दू–सिख संबंधों में पुनः कड़वाहट घोलने के षड्यंत्र भी रचती रहती है।

केंद्र में मोदी जी की सशक्त सरकार बनने के बाद आतंकियों के विरुद्ध सुरक्षा बलों की अत्यधिक सजगता के कारण आतंकी आक्रमणों के कुचले जाने से आई.एस.आई. व पाकपरस्त आतंकी संगठनों की बेचैनी बढ़ गयी है। इसीलिए ये सब एकजुट होकर और कुछ सिख आतंकी संगठनों का साथ लेकर भारत के विभिन्न भागों में अपने जिहादी षडयंत्रों को अंजाम देने के कोई भी अवसर छोड़ना नहीं चाहते। इसके लिए आवश्यक निर्देशों के अतिरिक्त आर्थिक सहायता भी इन संगठनों को आई.एस.आई. उपलब्ध कराती है।

पिछले वर्षों में मोदी जी के 'नोटबंदी' संबंधित कठोर निर्णय का स्वागत होना चाहिये था, क्योंकि आई.

एस.आई. के वर्षों पुराने 'जाली मुद्रा' से संबंधित षडयंत्रों की विस्तृत जानकारी देश की जनता को है ही नहीं, जिसके अंतर्गत पिछले लगभग 25 वर्षों से 'जाली मुद्रा' के माध्यम से हमारी अर्थव्यवस्था को क्षति पहुँचाने के साथ–साथ आतंकवादियों की भी आर्थिक सहायता होती आ रही है, जिससे आतंकवादियों के सैकड़ों संगठन अपने हजारों स्लीपिंग सेलों द्वारा लाखों देशद्रोहियों को पाल रहे हैं। हमारी सुरक्षा एजेंसियों के संदर्भ से अक्टूबर 2014 को छपे एक समाचार से यह भी ज्ञात हुआ था कि आई.एस.आई. हजारों करोड़ रुपये से अधिक के नकली नोट प्रति वर्ष छापती है और इनको 10 प्रतिशत के मूल्य पर बिचौलियों को देती है। जिस जाली मुद्रा को दाऊद इब्राहिम के इकबाल काना जैसे एजेंट अपने–अपने नेटवर्क के माध्यम से 20 से 50 प्रतिशत तक कमीशन पर देश के विभिन्न भागों में भेजते हैं। अगर पिछले 25 वर्षों के पुलिस रिकॉर्ड देखे जायें, तो इस काम में आई.एस.आई. ने भारत के अधिकांश पाकिस्तान परस्त मुसलमानों को जोड़ा है, जो बार–बार पकड़े भी गये और कठोर कानूनों के अभाव में छूटने के बाद फिर इन देशद्रोही/आतंकवादी कार्यों में संलिप्त पाये जाते रहे हैं। हमारी सुरक्षा एजेंसियों द्वारा जाली मुद्रा पर सितंबर 2014 में एक विस्तृत डोजियर तैयार किया गया था, जिसके अनुसार आई.एस.आई. उन्हीं प्रिंटिंग प्रैस में भारतीय नकली नोट छपवा रही थी, जहाँ पाकिस्तान के अपने नोट छपते हैं।

अगर भारत सरकार दृढ़ इच्छा शक्ति से देश के कोने–कोने में सख्ती से छानबीन करे, तो अनेक आतंकवादी व इनके गुप्तचरों के अतिरिक्त संभवतः कुछ सफेदपोश नेता, अधिकारी व समाजसेवी आदि भी इनके एजेंट निकल सकते हैं। जबकि पिछले 35–40 वर्षों के समाचारों के अनुसार इनके हजारों एजेंट विभिन्न नगरों से पकड़े जाते रहे हैं, पर दुर्भाग्य से साक्ष्यों के अभाव में ऐसे अधिकतर विचाराधीन अपराधी ठोस कार्यवाही से बचते रहे और छोड़े जाते रहे हैं।

आई.एस.आई. को आतंकवादी संगठनों का जनक/पोषक कहा जाए तो गलत नहीं होगा; परंतु हमारे सुरक्षा बलों की सक्रियता ने इस प्रकार इन जिहादियों की विशेष तौर पर इनकी गतिविधियों को नियंत्रित करके राष्ट्रवादी समाज का भी मनोबल बढ़ाया है, उससे राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सामान्य समाज भी अब जागरुक होने लगा है।

अतः गुप्तचर सँस्थाओं द्वारा प्राप्त जिहादी शत्रुओं की योजनाओं को समझो और इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए धर्म व देश की रक्षा के लिए सावधान रह कर अपने–अपने स्तर से तैयार रहो। सरकार के साथ–साथ सभी राष्ट्रवादियों का सामूहिक कर्तव्य है कि इन जिहादी दानवों से राष्ट्र की सुरक्षा में अपना यथासंभव योगदान करें। यह मत सोचिए कि यह कार्य केवल सरकार का है, बल्कि यह सोचें कि यह मेरी मातृभूमि है, तो इसकी रक्षा करना ही मेरा धर्म एवं कर्त्तव्य के साथ–साथ मेरा जन्मसिद्ध अधिकार भी है।

(राष्ट्रवादी चिंतक व लेखक), गाजियाबाद
guptavinod038@gmail.com

कठमुल्लों को रौंदने वाले चीन की शरणागति क्या इस्लाम में जायज है ?

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

मजहबी कट्टरपंथ कितना क्रूर और भयावह है, इस बात को अधिकतर इस्लामिक राष्ट्र जानते हैं। आज जब इजराइल अपने प्रति हुई अमानवीय मजहबी हिंसा का प्रतिकार कर रहा है, तो, इस्लामिक देशों से ज्यादा गैर इस्लामिक देशों को आपत्ति है। लगभग 24 गैर इस्लामिक देश ऐसे हैं, जो गाजा में हो रहे इजराइली प्रतिकार के विरुद्ध हैं, जबकि मजहबी शिक्षा के अनुसार वो 24 देश भी काफिरों की श्रेणी में ही आते हैं और जब भी मजहबी जिहादियों को अवसर मिलेगा, उन 24 देशों पर भी जिहादी आतंक बरपाया जाएगा।

यही समस्या भारत में भी है, मजहबी कट्टरपंथ और जिहादी आतंक से भारत का आंतरिक क्षेत्र पीड़ित है, पर उसके पश्चात भी गैर इस्लामिक समाज, मजहबी कट्टरपंथ के विरुद्ध मुखरता के साथ खड़ा नहीं होता। इसी मजहबी कट्टरपंथ को चीन ने जब अपने देश में रौंदा, तो, कोई भी मुल्ला मौलवी या दीनी मुसलमान चीन का विरोध नहीं कर पाया और इसके विपरीत पाकिस्तान ने चीन की शरणागति भी स्वीकार की, देखा जाए तो यह कठमुल्लाओं का मजहबी कट्टरपंथ तभी तक प्रभावी रहता है, जब तक उसको रौंदा न जाए, उस पर प्रहार न किया जाए।

कोई भी मजहब जो यह शिक्षा देता हो कि मानव जीवन का कोई महत्व नहीं, बल्कि महत्व जन्नत के जीवन का है, जिसको पाने के लिए अन्य धर्म के लोगों की हत्या वाजिब–उल–कत्ल है, तो वह मजहब, सभ्य समाज में सम्मान कैसे प्राप्त कर सकता है ?

वीर सावरकर, विज्ञान, वेद और डॉ. अंबेडकर से उनका संबंध

पंकज जगन्नाथ जायसवाल

भारत महान सुधारकों, स्वतंत्रता सेनानियों, शासकों और ऋषियों का घर है, जिन्होंने समाज की बेहतरी और हमारे शानदार राष्ट्र को अत्याचारों, शोषण और साँस्कृतिक पतन से बचाने के लिए महत्वपूर्ण बलिदान दिए हैं। इन वीर योद्धाओं ने भारत को कई आक्रमणों के साथ–साथ आंतरिक शत्रुओं से भी बचाया। उन्होंने अन्य बातों के अलावा विनाशकारी व्यवहारों को खत्म करके और व्यक्तियों के राष्ट्रीय चरित्र को विकसित करके समाज को जोड़ने का भी प्रयास किया है। स्वातंत्र्यवीर सावरकर एक ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने महान भारत के लिए कई मोर्चों पर काम किया, एकता को प्राथमिकता दी, वैज्ञानिक झुकाव रखा और 'राष्ट्र प्रथम' रवैया बनाए रखा।

साम्यवादियों, राहुल गाँधी सहित कई राजनीतिक हस्तियों का महान स्वतंत्रता योद्धाओं, रक्षा बलों और ऋषियों की ईमानदारी को चुनौती देने का इतिहास रहा है। वीर सावरकर को लगातार झूठी कहानियों के साथ निशाना बनाया गया है, क्योंकि वह उच्च जाति से हैं। ऐसी ही एक झूठी कहानी यह थी कि उन्होंने केवल उच्च जाति के हिंदुओं के लिए काम किया।

आइए डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के साथ उनके संबंधों को देखें

डॉ. भीमराव अंबेडकर और स्वातंत्र्य वीर सावरकर दोनों ही भारतीय समाज सुधारक थे, जिन्होंने समाज में असमानता और अन्याय के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हालाँकि उनके विचार और दृष्टिकोण कुछ हद तक भिन्न थे, लेकिन दोनों ने सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सावरकर की पहल पर 23 जनवरी, 1924 को हिंदू महासभा की स्थापना की गई और तीन प्रस्ताव पारित किए गए, जिनमें से एक अस्पृश्यता को गैरकानूनी घोषित करने के प्रयास को संबोधित करता था। अपनी पहल पर सावरकर ने इस आंदोलन को जन आंदोलन बनाने के लक्ष्य के साथ रत्नागिरी में सामूहिक भजन, सहभोज कार्यक्रम और मंदिर प्रवेश सहित कई कार्यक्रमों की योजना बनाई।

वीर सावरकर और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के बीच तुलना

- **जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई** – सावरकर ने जाति व्यवस्था का विरोध किया और 'सभी हिंदू समान हैं' का विचार प्रस्तुत किया।
- उन्होंने अस्पृश्यता के खिलाफ आवाज उठाई और मंदिर प्रवेश आंदोलन चलाया।
- **समानताएँ** – दोनों नेताओं ने जाति व्यवस्था का विरोध किया और समाज में असमानताओं को खत्म करने के लिए काम किया।
- **अंतर** – सावरकर ने हिंदुत्व और राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया, जबकि अंबेडकर ने दलितों के अधिकारों और सामाजिक न्याय पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।

4 अप्रैल 1942 को सावरकर द्वारा डॉ. अंबेडकर को भेजा गया बधाई संदेश सामाजिक सुधार आंदोलन में उनके आपसी सम्मान और सहयोग का एक उदाहरण है। यह संदेश उनके एक–दूसरे के प्रति सम्मान का प्रतीक है और समाज को बेहतर बनाने के उनके संयुक्त प्रयासों का प्रतिबिंब है। संदेश का सटीक पाठ इस प्रकार है–

प्रिय डॉ. अंबेडकर,

मैं देश की सेवा में आपके महान कार्य के लिए आपको बधाई देता हूँ। आपके अथक परिश्रम और दृढ़ संकल्प ने दलित समुदाय के लोगों को एक नई दिशा में प्रेरित किया है। आपने जो सामाजिक सुधार का काम किया है, वह हमें भारत के भविष्य को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने की अनुमति देता है। जाति व्यवस्था के खिलाफ आपने जो संघर्ष किया है, वह बहुत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक है। आपके नेतृत्व में समाज में बड़े बदलाव हुए हैं और होते रहेंगे। मैं इस प्रयास में आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

सावरकर ने इस प्रकार की भ्रांतियों की कड़ी आलोचना की – स्पर्श आपको गंदा करता है, धर्म नष्ट करता है, किसी को दूसरे को नहीं छूना

चाहिए, यदि किसी की छाया आप पर पड़ती है, तो आप नष्ट हो जाएँगे। सावरकर कहते हैं 'यदि आप उनके स्पर्श से नष्ट हो जाते हैं, तो आप और आपका ईश्वर जिसने उन्हें बनाया है, पहले ही नष्ट हो चुके हैं।'

यद्यपि अंबेडकर रत्नागिरी में सावरकर के कार्य को देखने नहीं आ सके, अंबेडकर ने सावरकर को निम्नलिखित पत्र में उनके कार्य के महत्व को व्यक्त किया, फिर भी मैं इस अवसर पर आपके द्वारा सामाजिक सुधार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्य की सराहना करना चाहता हूँ। यदि अछूतों को हिंदू समाज का अभिन्न अंग बनाना है, तो केवल गैर–जिम्मेदारी को हटाना ही पर्याप्त नहीं है, इसके लिए आपको चातुर्वर्ण्य को नष्ट करना होगा। मुझे खुशी है कि आप उन बहुत कम लोगों में से एक हैं, जिन्होंने इसे महसूस किया है। **(संदर्भ : सावरकर जीवनी, लेखक धनंजय कीर)**

वेदोक्तबंदी के विरुद्ध उनके विचार और कार्यवाही

कोई भी हिन्दू जो वेदों का अध्ययन करना चाहता है, उसे ऐसा करने का अधिकार होना चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति का हो। धर्म के नाम पर किए जाने वाले अवांछनीय कर्मकांड और अछूतों को दण्डित करना बंद होना चाहिए। सच्चा वैदिक धर्म आम लोगों तक पहुँचना चाहिए। उन्होंने इन गलत धारणाओं के बारे में केवल बातें ही नहीं कीं, बल्कि उन्हें करके भी दिखाया। 19 मई, 1929 को मालवण में आयोजित पूर्वप्रसंग परिषद में सावरकर की अध्यक्षता में अछूतों को वेदों के अध्ययन का अधिकार दिया गया और यज्ञोपवीत (जनेऊ) भी वितरित किया गया। कुछ राजनीतिक हस्तियों का दावा है कि वे ब्रिटिश सरकार की कठपुतली थे, यदि ऐसा है तो सरकार ने उनके साहित्य को क्यों दबाया?

उनके प्रकाशनों को सार्वजनिक डोमेन में न आने देना ब्रिटिश भय का स्पष्ट संकेत है और कई राजनीतिक नेता आज भी ब्रिटिश विरासत का पालन करते हैं।

अँग्रेजों ने सावरकर की निम्नलिखित पुस्तकों पर प्रतिबंध लगाया –

1) मैजिनी की जीवनी (मराठी) – 1908.
2) 1857 – स्वातंत्र्य समर (भारतीय स्वतंत्रता संग्राम) अँग्रेजी – 1909.
3) अँग्रेजों ने 10 मई 1930 को डॉ. नारायणराव सावरकर द्वारा संचालित साप्ताहिक 'श्रद्धानंद' को बंद कर दिया। इस साप्ताहिक में स्वातंत्र्य वीर सावरकर के कई लेख प्रकाशित हुए थे।
4) जुलाई 1931 में पंजाब सरकार ने सावरकर की उर्दू में जीवनी पर प्रतिबंध लगा दिया। बाद में तमिल, कन्नड़ और मराठी में भी जीवनी पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
5) मराठी पुस्तक 'माझी जन्मठेप' पर 1934 में प्रतिबंध लगा दिया गया था। तमिल में उनकी जीवनी पर 24 अक्टूबर 1940 को प्रतिबंध लगा दिया गया था।
6) नवंबर 1941 में जी.पी. परचुरे द्वारा लिखित सावरकर की संक्षिप्त जीवनी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
7) नवंबर 1943 में श्री एल. करंदीकर द्वारा मराठी में लिखी गई सावरकर की जीवनी पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

वीर सावरकर ने सनातन धर्म और विज्ञान को कैसे जोड़ा

विज्ञान के कट्टर समर्थक सावरकर– हिंदुत्व का जोरदार प्रचार और प्रस्तुति करने वाले स्वातंत्र्यवीर सावरकर का एक विशिष्ट पहलू विज्ञान के प्रति उनकी निष्ठा है। 'विज्ञान के प्रति निष्ठा को बढ़ावा देना बुद्धिजीवियों का कर्तव्य और धर्म है' कहते हुए सावरकर कहते हैं, 'जिस अर्थ में हम सुधारक यह समझने में विफल रहे हैं कि हमारे हिंदू राष्ट्र को दबाने वाली इस जाति व्यवस्था को समाप्त किए बिना हिंदू राष्ट्र का उदय असंभव है, उस अर्थ में हम, बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिक सुधारकों को मानव बुद्धि को सभी प्रकार की धार्मिक बयानबाजी और भ्रष्टाचार से मुक्त करना चाहिए, चाहे वह वैदिक हो, बाइबिल हो, कुरानिक हो या पौराणिक हो – यह धर्म का पवित्र कार्य है और इसमें मानव जाति का कल्याण निहित है।' स्वातंत्र्य वीर सावरकर ने ऐसे शब्दों में विज्ञान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है। ऐसा दृढ़ मत व्यक्त करते हुए, वे अपने सनातन धर्म को भी उतने ही दृढ़ शब्दों में व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय। साथ ही हमारा धर्म जो कहता है 'ओम सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै' या 'सत्यमेव जयते' या 'दीपज्योतिर्नमोस्तुते', विज्ञान के विरुद्ध नहीं जाता। यह विज्ञान का पूरक है। सावरकर के अनुयायी बाल जेरे कहते हैं, वीर सावरकर वैज्ञानिक सोच के थे। अध्यात्म उनकी निजी रुचि थी। लेकिन उनका मत था कि समाज के नियम अध्यात्म पर आधारित नहीं होने चाहिए। सावरकर कहते हैं, 'सृष्टि के नियम और वैज्ञानिक सत्य जो आज मानव ज्ञान की पहुँच में आ गए हैं, उन्हें हम सनातन धर्म कहते हैं। प्रकाश, ऊष्मा, गति, गणित, ध्वनि, बिजली, चुंबकत्व, विकिरण, फिजियोथेरेपी, मशीनरी, मूर्तिकला के जो नियम आज ज्ञात हैं, वे ही सच्चा सनातन धर्म हैं...। परिस्थितियाँ बदलने पर इन प्रतिबंधों को बदलना वांछनीय है। इसलिए व्यक्ति के सभी सांसारिक व्यवहार, आचार–विचार, रीति–रिवाज, प्रतिबंध इस बात की कसौटी पर कसे जाने चाहिए कि वे इस दुनियाँ में उसके लिए लाभदायक हैं या नहीं। परिस्थिति के अनुसार उनमें परिवर्तन किया जाना चाहिए। ऐसे मानवीय व्यवहार शाश्वत नहीं हो सकते।' (किर्लोस्कर – 1934 से 1937, सावरकर के सामाजिक विचार : पृष्ठ 41 से 52)

भारतीय दंड संहिता की धारा 51–ए इस बात पर जोर देती है कि वैज्ञानिक मानसिकता, मानवता, जिज्ञासा और सुधार नागरिक के मौलिक कर्तव्यों का आधार हैं। इससे पता चलता है कि संविधान ने सावरकर के वैज्ञानिक विचारों को स्वीकार किया है। भले ही कई राजनीतिक हस्तियाँ और कम्युनिस्ट वीर सावरकर का तिरस्कार करते हों, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में उनकी उपलब्धियाँ, हिंदुओं को एक साथ लाने की उनकी क्षमता, जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई और उनके बहुमुखी चरित्र ने उन्हें राष्ट्रीय नायक बना दिया है। इस असाधारण व्यक्ति को नमन।

pankajjayswal1977@gmail.com

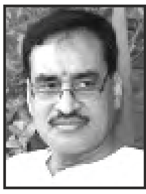

विनोद बंसल

शौर्य साधना सृजन व त्याग की प्रतिमूर्ति
माता अहिल्याबाई होलकर

जरा सोचिए....! जब दरिंदा औरंगजेब मस्जिदों की आड़ में मंदिर तोड़ रहा था, तब कौन थी वो रानी जो मुगलों की छाती पर खड़ी होकर मंदिर बनवा रही थी? जब दिल्ली के तख्त पर इस्लामी कट्टरता का नंगा नाच हो रहा था, तब कौन थी वो महिला जिसने अपने राज्य का भी मालिक भगवान शिव को बना दिया था ? नाम है माँ अहिल्याबाई होल्कर। सिर्फ एक महारानी नहीं, भारत की आत्मा थीं वो। आज के हिंदुस्थान में अगर वो होतीं, तो, सेक्युलरवाद के नाम पर हिंदुओं को गाली देने वालों की चूलें हिला देतीं और ये जो औरंगजेब के पिल्ले औरंगजेब को अब्बू–अब्बू कहते हैं, उन्हें भारत की धरती में गाड़ देतीं। ये कहानी किसी आम रानी की नहीं, अपितु ये गाथा है उस देवी की, जिसने औरंगजेब जैसे जिहादी आक्रांताओं से न सिर्फ धर्म की रक्षा की बल्कि अपने सिंहासन को महाकाल के चरणों में अर्पित कर खुद को उसकी सिर्फ एक सेविका कहा।

31 मई 1725 को महाराष्ट्र के छौंड़ी गाँव में जन्मी जाति से तो पाटिल की बेटी लेकिन कर्म से भारत माता की देवी! मराठा सेना के सेनानायक मल्हारराव होल्कर ने मात्र 8 साल की अहिल्या में वो तेज देखा, जो एक साम्राज्ञी में होना चाहिए, लेकिन उनकी असली परीक्षा तब हुई, जब मुगल आक्रांताओं ने देश की सँस्कृति पर हमला बोल रखा था। मंदिर तोड़े जा रहे थे, शिवलिंग खंडित किए जा रहे थे और तब अहिल्या बाई खड़ी हुई तलवार की ललकार लेकर। भगवान शिव की आराधना करते हुए उन्होंने सिंहासन को शिव के चरणों में समर्पित कर दिया और खुद को शंकर की सेविका कहा। शासन के हर आदेश पर हस्ताक्षर होते थे 'श्री शंकर' के नाम से। उन्होंने बताया कि 'राज चलाना सेवा है और धर्म की रक्षा उनका कर्त्तव्य।'

जब आतंकी औरंगजेब ने काशी विश्वनाथ मंदिर तुड़वाया, तब, अहिल्या बाई ने उसका पुनर्निर्माण करवाया। न कोई सेना, न कोई तख्त, सिर्फ एक संकल्प कि 'शिव को फिर से उनका घर मिलना चाहिए'। अपने राज्य क्षेत्र में तो हर एक कोई विकास करता है, किंतु वे एक ऐसी रानी थी, जिन्होंने अपने विकास और आध्यात्मिकता का दर्शन राज्य की सीमाओं से सैकड़ों किलोमीटर दूर तक फैलाया। यही कारण है कि वर्तमान में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बाँग्लादेश तक भी उनके बने हुए मंदिर कुएँ, बावड़ी और धर्मशाला आज भी उनकी कीर्ति का गुणगान कर रहे हैं। काशी से अयोध्या, सोमनाथ से रामेश्वरम तक कुल 250 से अधिक मंदिर, तीर्थ, घाट, कुआँ, बाबड़ी, तालाब और धर्मशालाएँ अहिल्याबाई ने अपने खजाने से बनवाई। आज आप चार धाम यात्रा पर निकलते हैं और जहाँ–जहाँ मंदिर दिखते हैं, उनका इतिहास पढ़िए, वहाँ एक नाम बार–बार दोहराया जाता है, वो है 'अहिल्याबाई होल्कर'।

'कूटनीति में तज्ञ'

कूटनीति में वह इतनी कुशल थीं कि एक बार उनके पड़ोस के राजा ने पत्र भेजा की या तो आप अपनी सीमाओं को मेरी सीमा में मिला दो, अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। उस राजा को लगा कि वहाँ एक ऐसी महिला का शासन है, जिसके परिवार में कोई नहीं बचा। यहाँ तक कि उनका पुत्र भी चल बसा। ऐसी स्थिति में वह पूरी तरह से टूट चुकी होगी और आत्मसमर्पण कर देगी। किंतु रानी अहिल्या ने उसे एक ऐसा जबाव भेजा कि राजा स्वयं आत्मसमर्पण के लिए मजबूर हो गया। उन्होंने लिखा कि स्त्रियों के नेतृत्व में मेरी सेना की टुकड़ी आपसे युद्ध को तैयार है, किंतु स्मरण रखना, ये युद्ध यदि आप हार गए तो दुनियाँ आपके मुँह पर थूकेगी कि महिलाओं से हारे और अगर जीत गए तो भी आपको अपयश का भागी होना पड़ेगा कि महिलाओं से युद्ध किया। हालांकि मैं पूरी तरह से युद्ध के लिए तैयार हूँ।

ना कोई महल, ना कोई शाही ठाठ। सादा साड़ी में एक सीधी–सादी महिला, जो सुबह महाकाल की आरती करती थी और दिन भर प्रजा की सेवा। महिलाओं को शिक्षा दी, बुनकरों को रोजगार दिया, शासन को धर्म से जोड़ा और न्याय से जन तंत्र को, कूटनीति की मर्मज्ञ थीं, तो शत्रुओं की संहारक। आज कुछ लोग मंदिरों के अस्तित्व पर सवाल उठाते हैं। कुछ लोग गंगा–काशी को मिथक कहते हैं। लेकिन अहिल्याबाई के जीते–जागते पुनर्निर्मित मंदिर जिहादी सोच को आज भी आइना दिखाते हैं। उनके बनाए घाटों से आज भी दीपदान होता है, उनके बनाए मंदिरों में आज भी असँख्य घंटियाँ बजती हैं।

आज जब हिन्दू समाज को बांटने की साजिश हो रही है और मंदिरों को कोर्ट–कचहरी में घसीटा जा रहा है, तब रानी अहिल्या बाई का जीवन हमें याद दिलाता है कि नारी जब धर्म की रक्षा का व्रत लेती है, तो वो सिंहासन भले छोड़ दे, किंतु धर्म को नहीं छोड़ती।

ऐसी दिव्यात्मा व वीरांगना रानी की त्रि–शताब्दी वर्ष पर उन्हें कोटि–कोटि नमन्....।

murari.shukla@gmail.com

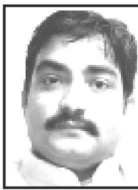

प्रवेश कुमार

असंतुलित रिलीजीयस जनसँख्या वृद्धि भारत समेत वैश्विक समस्या

पूरे विश्व में इस्लाम और कट्टर इस्लाम आतंक का परिचायक बनकर उभरा है। एक और महत्वपूर्ण विषय यह भी देखने को मिलता है, जिसमें ईसाई मत के मानने वाले तो अंतर्राष्ट्रीय पटल पर संस्थानों की मदद से राष्ट्रों का विभाजन कर अपना शासन स्थापित करते हैं, वहीं इस्लाम यह सब कट्टरता और आतंक के दम पर करता है।

असंतुलित मजहबी जनसँख्या वृद्धि भारत समेत वैश्विक समस्या, हाल में बाँग्लादेश में रह रहे हिन्दू समाज पर अत्याचार वहीं, पश्चिम बंगाल में मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में हिन्दुओं पर हो रहे हमलों ने एक बार पुनः रिलीजीयस पॉप्युलेशन ग्रोथ डिसबैलेंस को जानने और समझने की आवश्यकता पर बल दिया है।

हम देखें कि ब्रिटेन में प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने 8 दिसंबर 2006 को अपने भाषण में कहा था कि कट्टर मुस्लिमों का यह कर्तव्य है कि वह ब्रिटिश समाज तथा उसके परम्परा, रीति–रिवाज आदि के अनुसार अपना आचरण करें। वहीं इन लोगों को इजाजत नहीं है कि वे देश के लोकतांत्रिक मूल्यों, सहिष्णुता तथा कानून का आदर जैसे मौलिक मूल्यों का आदर ना करें। हमारी सहिष्णुता ही ब्रिटेन को ब्रिटेन बनाती है। इसका आदर करें, वरना यहाँ ना आएँ।

हम ऐसे किसी भी नफरत फैलाने वाले लोगों को नहीं चाहते, फिर चाहे वह किसी भी जाति एवं रिलीजन का हो। इतना ही नहीं ब्लेयर ने मुस्लिम बुर्का उचित निषेध का समर्थन करते हुए कहा कि यदि तमाम मुस्लिम वर्ग राज्य से किसी भी प्रकार का आर्थिक अनुदान चाहते हैं, तो उन्हें यह दिखाना होगा कि वे ब्रिटेन के मूल्यों के अनुसार अपना आचरण कर रहे हैं। वहीं जापानी जनरल ऑफ पॉलिटिकल सायन्स के शोध पत्र के अनुसार भी रिलीजीयस पॉपुलेशन ग्रोथ डिसबैलेंस पर एक विस्तृत शोध छापा गया, जिसमें इसके उपयुक्त कारक इस प्रकार दिखाये गए :–

- ❖ मुस्लिम वर्ग में जनसँख्या वृद्धि का कारण टीएफआर में अधिकता है।
- ❖ कम उम्र में शादी जो कि मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार ही चलता है।
- ❖ मुस्लिम महिलाओं की प्रजनन आयु अंतराल अधिक होना।
- ❖ मुस्लिम पुरुषों की शादी की अधिकता।
- ❖ मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के द्वारा पुरुषों के पक्ष में ही निर्णय देना।

इसी शोध पत्र के अनुसार यह भी दिखाया गया कि युद्ध, आन्तरिक अशांति, तंगी एवं परस्पर टकराव, जिसमें रिलीजीयस टकराव के चलते व्याप्त डर की वजह से भी मुस्लिम वर्ग में जनसँख्या वृद्धि विस्फोट को कई देशों में देखा गया है। वहीं शांति प्रिय देशों में अवैधानिक घुसपैठ भी बढ़ी है। इसी प्रकार डेनमार्क के संदर्भ में ¡Xg Ru~ OEnaskg ने अपने एक शोध में यह पाया कि किस प्रकार से इस्लाम मूल निवासी डनेस की रिलीजीयस डेमोग्राफी को परिवर्तित कर रहा है और उनका धर्मान्तरण कर इस्लाम का विस्तार कर रहा है, जिसकी वजह से देश में कई समस्यायों का जन्म हुआ है, जिनमें आंतरिक सुरक्षा प्रमुख समस्या है। इससे

यह साबित होता है कि इस्लाम का विस्तार भारत जैसे विकासशील देश पर ही नहीं, बल्कि तमाम अन्य विकसित यूरोपीयन राष्ट्रों में भी एक समस्या पैदा कर रहे हैं।

इसके अलावा अन्य शोधों में भी माना गया है कि यूरोप में इस्लाम सबसे तेजी से बढ़ता हुआ रिलीजन है। इसके उदाहरण के तौर पर फ्रांस में 50 लाख मुस्लिम रहते हैं, जो कि यूरोप की सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाला राष्ट्र है। इसी श्रेणी में जर्मनी में भी 40 लाख मुस्लिम रहते हैं। फ्रांस की रिपोर्ट के अनुसार जो फ्रांस के मूल निवासियों का जन्मदर 1.4 बच्चे प्रत्येक महिला है, वहीं मुस्लिम महिलाओं में 3.4 से 4 प्रतिशत है।

फ्रांस के चार्ल्स गेव जो कि एक अर्थशास्त्री हैं, वे बताते हैं कि ठीक इसी अनुपात में अगर जनसँख्या वृद्धि होती रही, तो 2057 तक फ्रांस मुस्लिम बहुल राष्ट्र बन जाएगा। ऐसी ही समान स्थिति हम भारत में भी देख सकते हैं, जो कि मैं अपने लेख के आरम्भ में ही दर्शा चुका हूँ कि कुछ ही दशकों में भारत के कई जिलों एवं क्षेत्रों में मुस्लिम आबादी–हिन्दू आबादी को काफी पीछे छोड़ देगी। हम देखें कि म्यांमार ने मुस्लिम रोहिंग्या को पहले अपने यहाँ शरण दी, लेकिन कुछ ही वर्षों में वहाँ मुस्लिम वर्ग ने अपनी जनसँख्या में तीव्र वृद्धि कर म्यांमार में आन्तरिक अशांति पैदा करने का प्रयास किया, जिसका परिणाम म्यांमार ने इन्हें अपने देश से खदेड़ने को मजबूर कर दिया।

आप देखें कि एक शांतिपूर्ण देश भी असंतुलित रिलीजीयस जनसँख्या वृद्धि के कारण अशांत बन गया। इन्हीं रोहंग्यि को आज भारत का मुस्लिम वर्ग भारत में शरण देने की बात करता है। क्या हम नहीं जानते कि असम के 12 जिलों में आज हिन्दू अल्पसँख्यक हो गया है ? वहीं सम्पूर्ण भारत के 313 जिलों में कुल हिन्दुओं की प्रजनन दर समान्य से भी कम है, जबकि तालिका–3 के अनुसार देखा जा सकता है कि मुस्लिम बहुल जिलों में किस हिसाब से जनसँख्या की वृद्धि हो रही है? हरियाणा के मेवात में अधिकतर गाँव हिन्दू विहीन हो गये हैं, क्या यह सच लोगों से छुपा

है? हम देखें कि जहाँ भारत मुस्लिम घुसपैठ से जूझ ही रहा है, वहीं वैश्विक स्तर पर भी मुस्लिम मतावलंबियों द्वारा किस प्रकार से डेमोग्राफिक बदलाव की मदद से कई देशों में दारुल इस्लाम को स्थापित कर लिया गया है। यह दार–उल–इस्लाम जिसके बारे में पूज्य बाबा साहब अम्बेडकर ने वर्षों पहले चेताया था। डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि मुस्लिम धर्म के सिद्धांतों के अनुसार विश्व दो हिस्सों में विभाजित है–एक दार–उल–इस्लाम तथा दूसरा दार–उल–हर्ब। मुस्लिम शासक से शासित देश को दार–उल– इस्लाम कहा जाता है। वहीं जहाँ मुसलमान रहते तो हैं, परंतु वहाँ उनका शासक या शासन नहीं है, उसे दार–उल –हर्ब कहा जाता है। यह दार–उल– इस्लाम बनाने की प्रक्रिया वर्षों की है, जो दुनियाँ के साथ–साथ भारत में भी चली आ रही है।

इसी का प्रतिकार था कि देवेंद्रनाथ टैगोर ने 1867 में हिन्दू मेलों का आयोजन किया। वहीं 1870 के दशक में बंकिम चंद्र चटर्जी ने 'वंदे मातरम्' गीत लिखा, वहीं उनका उपन्यास आनंद मठ अपने एंटी–मुस्लिम विचारों के चलते ही चर्चित हुआ।

1882 में बंकिम चंद्र चटर्जी ने राष्ट्र धर्म की भावना को ऊपर रखते हुए मुस्लिम शासकों के इतिहास को मानने से इनकार कर दिया था। बंग दर्शन में प्रकाशित इस लेख में बंकिम चंद्र लिखते हैं कि मेरे विचार से अँग्रेजी की किसी किताब में बंगाल का सही इतिहास नहीं लिखा गया है। इन किताबों में इधर–उधर की बाते हैं, जिसमें मुस्लिम शासकों के जन्म, मृत्यु और उनकी पारिवारिक कलह के अलावा और कुछ नहीं। हम देखें कि ब्रिटिश भारतीय सेना के कुल मुस्लिम सैनिकों में से 90 प्रतिशत से अधिक ने विभाजन के समय पाकिस्तानी सेना में शामिल होने का चुनाव किया।

विभाजन के तत्काल बाद 1947 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया और जम्मू एवं कश्मीर के एक तिहाई भाग पर कब्जा कर लिया। इन आक्रमणकारियों में वे मुस्लिम सैनिक भी थे, जो कभी आजाद हिन्द फौज में शामिल थे। विभाजन के समय

पाकिस्तान की तुलना में यदि सैन्य संतुलन भारत के विरुद्ध होता, तो नए मुस्लिम राष्ट्र ने भारतीय सीमावर्ती मुस्लिम बहुल राज्यों–राजस्थान, गुजरात और बंगाल के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को निगलने का प्रयास किया होता, जहाँ मुसलमानों की सँख्या हिदुओं से अधिक थी। हिन्दुओं से भिन्न होने के भाव एवं अन्य मतावलंबियों को काफिर मानने की मानसिकता ने भारत के विभाजन के बीज बोए; लेकिन अफसोस इस बात का सदैव रहा है कि इस देश के बौद्धिक जमात ने अपने को प्रगतिशील कहते हुए आज भी मुस्लिम और उसके नाम पर हो रही तुष्टिकरण की राजनीति का कोई प्रतिकार नहीं किया।

अगर हम रिलीजीयस जीओ पॉलिटिक्स को देखें, तो हिन्दू धर्म में विस्तारवाद नहीं है, क्योंकि हिन्दू ही एक मात्र धर्म है, जो एक किताब, एक भगवान, एक पूजा पद्धति पर आधारित ना होकर विश्व मानव और बंधुत्व के विचार, हिन्दुत्व में अगाध श्रद्धा रखता है। इसलिए हमारे सब हैं और हम सबके हैं, इसके विपरीत विश्व के दो प्रमुख रिलीजन ईसाई, इस्लाम (मुस्लिम) यह रिलीजीयस विस्तारवाद में विश्वास रखते हैं, जिसके अनेकों उदाहरण हैं। जिसमें हम देखें कि पूर्वी तिमोर जो कभी मुस्लिम बहुल होता था, 1975 में यह इंडोनेशिया का हिस्सा भी हो गया, तब उसका रिलीजीयस डेमोग्राफिक संरचना में 20 प्रतिशत ईसाई थे, जिसके बाद ईसाई मिशनरियों द्वारा रिलीजीयस कन्वर्जन से दो दशकों में ही पूर्वी तिमोर में 95 प्रतिशत ईसाई हो गए और 5 प्रतिशत ही मुस्लिम बचे, जो कि आंतरिक विवाद का कारण बना और यू.एन.ओ. के हस्तक्षेप से जनमत संग्रह द्वारा पूर्वी तिमोर फिर इंडोनेशिया से टूट गया और एक नव राष्ट्र बन गया, जिसमें बहुल आबादी ईसाई है। इसमें एक रोमांचित करने वाली बात यह है कि जिस ईसाई पादरी कालरेसफिल्प जेमिस बेलो ने रिलीजीयस कन्वर्जन को अंजाम दिया उसे 1996 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला। वहीं सूडान (पूर्वी–दक्षिणी) जहाँ पर 60 अलग– अलग जातीए समूह थे, जो कि ईसाई एवं मुस्लिम के आपसी द्वन्द में समाप्त हो गए। इस विवाद का मूल कारण संसाधनों पर मुस्लिम वर्ग द्वारा कब्जे के प्रयास थे, जिसने सूडान को दो हिस्सों में भी विभाजित कर दिया।

इसी प्रकार कोसोबो में भी इस्लामिक आतंक एवं जनसँख्या जिहाद ने सर्व रूढ़िवादी ईसाइयों को भगाने का काम किया और उनका उत्पीड़न किया, जिसमें अलबनीयन (मुस्लिम) विद्यार्थियों द्वारा दंगे एवं अशांति फैलाए गए, जिसमें कोसोबो का कई बार विभाजन देखने को मिला। अब कोसोबो की जनसँख्या में मुस्लिम, जो 1921 में मात्र 65 प्रतिशत थे वहीं 2000 में 88 प्रतिशत थे, जो 2006 तक 95 प्रतिशत हो गए। बाकी मतावलंबी कहाँ गये यह विचारणीय है ? वहीं नाईजीरिया में भी जातीय समूहों का रिलीजीयस आयडेंटिटी बेस्ड कन्वर्जन मुस्लिम रिलीजीयस समूह द्वारा किया गया। इसी प्रकार से कोटेडिवोरिक में मुस्लिम बहुल वर्ग द्वारा अल्पसँख्यक वर्गों पर अत्याचार की घटनाएँ अंजाम दी गईं और आज भी बदस्तूर जारी हैं।

घाना में इसी प्रकार ईसाई मिशनरियों द्वारा जातीय समूहों का रिलीजीयस कन्वर्जन किया गया है।

इतिहास के पन्नों में पर्सिया में पारसियों को किस प्रकार बारी–बारी से ईसाई एवं मुस्लिमों द्वारा उत्पीड़ित होकर भारत की ओर भागना पड़ा है, यह भी एक इतिहास है। पूरे विश्व में इस्लाम और कट्टर इस्लाम आतंक का परिचायक बनकर उभरा है। एक और महत्वपूर्ण विषय यह भी देखने को मिलता है, जिसमें ईसाई मत के मानने वाले तो अंतर्राष्ट्रीय पटल पर संस्थानों की मदद से राष्ट्रों का विभाजन कर अपना शासन स्थापित करते हैं, वहीं इस्लाम यह सब कट्टरता और आतंक के दम पर करता है।

(लेखक सहायक प्रोफेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत का केन्द्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली।)

(वीर अर्जुन से साभार

मध्य भारत प्रान्त में धर्मरक्षकों का दक्षता वर्ग संपन्न

गत 29 मई से 31 मई, 2025 तक त्रि–दिवसीय धर्मरक्षक दक्षता वर्ग भोपाल स्थित विश्व हिन्दू परिषद प्रान्त कार्यालय में संपन्न हो गया है। प्रकाश योग्य विषय यह है कि मध्य भारत प्रान्त में 32 जिलों से 13 जिले अत्यंत संवेदनशील हैं, इन 13 जिलों से 18 प्रखण्ड चयनित किए गए हैं, केवल अब तक 11 प्रखण्ड में धर्मरक्षक कार्यरत हैं। प्रान्त स्तर के कार्यकर्ता तथा धर्मरक्षक को मिलाकर 18 कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हुआ। इस वर्ग में केन्द्रीय सह मंत्री श्री अरुण नेटके, प्रान्त संगठन मन्त्री श्री सुरेन्द्र जी चौहान तथा केन्द्रीय मंत्री श्री सुधांशु मोहन पटनायक पूर्ण समय उपस्थित रहे।

murari.shukla@gmail.com

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

सनातन सँस्कृति का यह स्वर्णिम दौर चल रहा है और भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सनातन सँस्कृति के महत्त्वपूर्ण विचारों "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार है तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" सभी प्रसन्न एवं सुखी रहें, के इन्हीं मूलमंत्रों के साथ सनातन सँस्कृति के संवाहक के रूप में हम सभी के मार्गदर्शक बन रहे हैं और समस्त विश्व को सनातन के विचारों से अवगत करवा रहे हैं। एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में हमारा इतिहास करीब साढ़े सात दशक पुराना है, लेकिन हमारी सभ्यता 5,000 वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत के खाते में अनगिनत उपलब्धियाँ हैं। उनके स्मरण के लिए इससे बेहतर और क्या अवसर हो सकता है कि जब हम अपनी आजादी के अमृतकाल में हैं, तो केवल इस दिशा में ठोस और एकजुट प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

भक्ति से बदलता भारत

सँस्कृतिक एकता एवं अखंडता के प्रेरणा केन्द्र हैं मंदिर

'श्रीराम से मिली सबके साथ की प्रेरणा' – हम सब इस बात से भलीभाँति परिचित हैं कि भारतीय सँस्कृति का विश्वकोष कहा जाने वाला 'रामचरित मानस' दर्शन, आचारशास्त्र, शिक्षा, समाज सुधार, साहित्यिक, आदि कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, जो व्यक्ति को जीवन मूल्यों का दर्शन एवं गुणों के बारे में बहुत कुछ सिखाता है। लेकिन एक शब्द जो अक्सर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने संबोधन में कहते रहते हैं, "सबका साथ" इसकी प्रेरणा भी हमें प्रभु श्री राम से मिलती है, जिन्होंने रावण का मुकाबला करने के लिए सबको साथ लेकर अपनी एक अलग सेना बनाई। ये वो लोग थे, जिनके पास ना कोई सैन्य क्षमता थी और ना ही कोई युद्ध लड़ने का अनुभव था, लेकिन ये सभी संगठित अवश्य थे और साथ एवं विश्वास से लड़कर रावण पर विजय भी पाई। संगठित कार्य ही उत्तम परिणाम के आधार को प्रस्तुत करता है।

'जीवंत है सनातन चरित्र' – सदियों से भारत अपनी सँस्कृतिक आध्यात्मिकता के लिए विख्यात है। यह देश आध्यात्मिक ज्ञान का केंद्र रहा है। यहाँ बहने वाले आस्था के सैलाब को सारी दुनियाँ देखने आती रही है। अनेक विदेशी यात्रियों ने भी अपने संस्मरणों में इनका उल्लेख किया है। हजारों साल के इतिहास में हमारे श्रद्धा केंद्रों को विधर्मियों द्वारा ध्वस्त किये जाने के बावजूद ये पवित्र स्थल अपने पुण्य प्रवाह के साथ वर्षों से टिके हुए हैं। अपनी उत्कृष्टता का दंभ भरने वाले मिस्र, रोम जैसी सभ्यताओं के चिन्ह आज नहीं के बराबर हैं, उनका एक भी सँस्कृतिक अंश अपने मूल स्वरूप में उपस्थित नहीं है। परन्तु भारत एकमात्र ऐसा देश है, जो यह दावा कर सकता है कि उसने लाखों विपत्तियों के बावजूद अपनी आध्यात्मिकता और आस्था केंद्रों की प्राण शक्ति से अपने सनातन चरित्र को जीवंत रखा है। वस्तुतः आजादी का सूरज निकलने के बाद उम्मीद थी कि स्वाधीन भारत की सरकारें इस पर ध्यान देंगी और हमारे आस्था के केंद्र अपनी प्राचीन अवस्था में पुर्नस्थापित होंगे, परन्तु एक विशेष प्रकार के तुष्टिकरण की राजनीति ने अपनी जगह बना ली और भारत के अनेक श्रद्धा केंद्र विकास की राह ताकते रहे।

'नये युग की शुरुआत' – यह दैवीय संयोग ही है कि 2014 से भारत के आध्यात्मिक जगत में सँस्कृतिक उत्थान के एक नये युग की शुरुआत हुई। 500 वर्षों से विवादित श्रीराम मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ और मोदी सरकार के नेतृत्व में तेजी से मंदिर निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ। भारी प्राकृतिक आपदा झेल चुके हमारे चार धाम में एक केदारनाथ धाम का कायाकल्प भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इच्छा शक्ति से सम्पन्न हो चुका है।

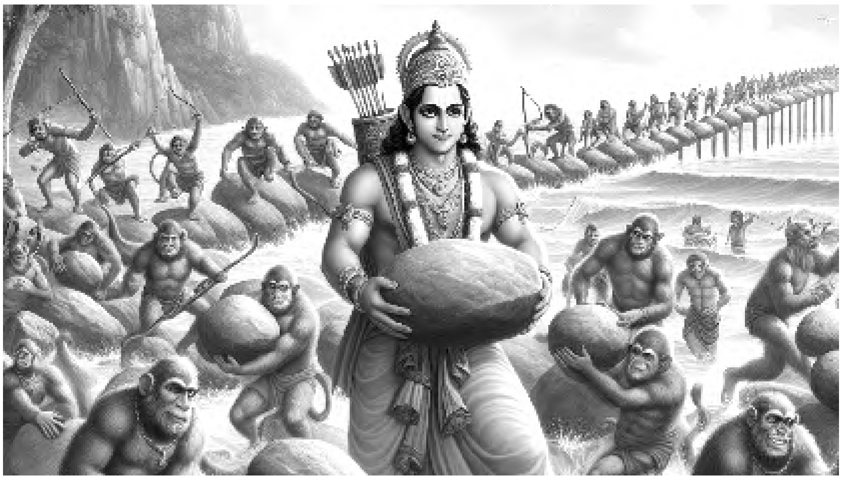

उत्तराखंड में चारधाम यात्रा नामक परियोजना परवान चढ़ चुकी है और लगभग सभी दुर्गम आस्था केंद्रों पर अब 12 महीने आसानी से पहुँचा जा सकता है। ऋषिकेश और कर्ण प्रयाग को रेलवे मार्ग से भी जोड़ा जा रहा है, जो 2025 तक पूरा होगा। कश्मीर में धारा 370 की समाप्ति के बाद मंदिरों के पुनरुद्धार का काम शुरू हुआ है। श्रीनगर स्थित रघुनाथ मंदिर हो या माता हिंगलाज का मंदिर, सभी प्रमुख मंदिरों के स्वरूप को नवजीवन दिया जा रहा है। वर्ष 2022 में भारत की आध्यात्मिक राजधानी काशी का पुनरुद्धार नरेंद्र मोदी जी के कर कमलों से ही संभव हुआ है। वह उनका संसदीय क्षेत्र है, इसलिए काशी का विकास हुआ, ऐसा नहीं है। क्योंकि पहले भी अनेक बड़े नेता वहाँ का संसदीय नेतृत्व कर चुके हैं, लेकिन किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि काशी की संकरी गलियों में विश्वनाथ भगवान के लिए कॉरीडोर बन सकता है। परन्तु यह संभव हुआ है और बहुत तेज गति से हुआ है। आज काशी अपने नए रंगरूप में अपनी आध्यात्मिक पहचान के साथ चमचमा रही है। काशी न्यारी हो गई है। जहाँ दुनियाँ भर के लोग आकर वास्तविक भारत और उसकी आध्यात्मिक राजधानी को निहार रहे हैं। प्रधानमंत्री ने जितना ध्यान देश के मंदिरों के पुनरुद्धार पर दिया है, उतना ही ध्यान विदेशों में भी जीर्ण–शीर्ण हालत में पड़े पुराने मंदिरों की योजनाओं पर भी लगाया है। इस दिशा में सबसे पहले बहरीन स्थित 200 साल पुराने श्रीनाथ जी के मंदिर के लिए 4.2 मिलियन डॉलर खर्च किये जाने की योजना है। इसके अलावा प्रधानमंत्री द्वारा अबूधाबी में भी यहाँ के पहले मंदिर की 2018 में आधारशिला रखी गई। संयुक्त अरब अमीरात में विशाल हिन्दू मंदिर का लोकार्पण आधिकारिक रूप से वहाँ की सरकार ने किया। जेबेली अली अमीरात के कॉरीडोर ऑफ चॉलरेस में स्थित इस विशाल मंदिर के बनने से वहाँ के हिन्दुओं का दशकों पुराना सपना पूरा हुआ है, जिसके पीछे भारत की मोदी सरकार का अथक प्रयास है।

गुजरात के मेहसाणा जिले में चालुक्य शासन में बनाए गये मोढ़ेरा के सूर्य मंदिर का भी पुनरुद्धार हुआ। वहाँ उड़ी प्रोजेक्शन लाइट एंड साउंड शो के उद्घाटन के दौरान नरेंद्र मोदी जब उसके अतीत का स्मरण करते हुए यह कह रहे थे कि इस स्थान पर अनगिनत आक्रमण किये गये, लेकिन अब मोढ़ेरा अपनी प्राचीन चरित्र को बनाए रखते हुए आधुनिकता के साथ बढ़ रहा है, तब वह देश की जनता को यह संदेश दे रहे थे कि भारत के सभी प्राचीन आस्था स्थल अपनी गौरवशाली पहचान के साथ आधुनिक सुविधाओं से लैस हो सकते हैं और हो रहे हैं। लगभग दो साल पहले ही सोमनाथ के मंदिर के पुनरुद्धार और अन्य सुविधाओं के लिए पीएम ने कई परियोजनाओं का शुभारंभ किया था। आने वाले समय में सोमनाथ भी आधुनिक सुविधाओं से लैस दिखेगा।

पिछले वर्ष जून महीने में पुणे के देहू में नये तुकाराम महाराज मंदिर और गुजरात के पावागढ़ मंदिर के ऊपर बने कालिका माता मंदिर के पुनर्निर्माण का उद्घाटन भी प्रधानमंत्री जी ने किया था। पावागढ़ में माँ कालिका को नमन करते हुए उन्होंने कहा था कि हमारे श्रद्धास्थल हर भारतीय के प्रेरणा केंद्र हैं और ये स्थल आस्था के साथ–साथ नई संभावनाओं के स्रोत भी बन रहे हैं। प्रधानमंत्री की इस बात के बड़े गहरे अर्थ हैं, क्योंकि यह स्वाभाविक है कि जिन मंदिरों या आस्था केंद्रों का पुनरुद्धार हो रहा है, वहाँ केवल मंदिर परिसर का ही कायाकल्प नहीं होता, बल्कि उसके साथ उस क्षेत्र का समग्र विकास भी होता है। काशी, सोमनाथ, केदारनाथ, देहू, पावागढ़ सहित सभी स्थलों पर पुनरुद्धार कार्य के साथ–साथ अनेक जरूरी, विकास और रोजगारपरक योजनाओं को भी अमलीजामा पहनाया जा रहा है। सभी स्थलों पर हजारों करोड़ों की परियोजनाओं को जमीन पर उतारा जा रहा है, जो नई संभावनाओं के द्वार खोलेंगे। निःसंदेह ऐसे सभी क्षेत्रों में अध्यात्म–सँस्कृति का नया सबेरा हुआ है, तो विकास की नई गंगा भी प्रवाहित हुई है। सबसे बड़े लोकतीर्थ अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण के साथ–साथ लाखों करोड़ की परियोजनाओं पर काम हो रहा है। इंटरनेशनल एयरपोर्ट से लेकर एक्सप्रेस वे के निर्माण से अयोध्या को वैश्विक सुविधाओं वाला महानगर बनाने का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। काशी, सोमनाथ, केदारनाथ सहित सभी स्थानों पर यही स्थिति है। इसलिए प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित धार्मिक आस्था स्थलों को विकास के एक नये मॉडल के रूप में भी देखा जाना चाहिए। इन स्थलों पर यात्रियों की सँख्या बढ़ेगी तो रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और राजस्व में भी वृद्धि होगी। देश की अर्थव्यवस्था को भी इससे नई उड़ान मिलेगी।

'साँस्कृतिक अस्मिता का पुनर्जागरण' – उल्लेखनीय है कि नरेंद्र मोदी देश के किसी भी हिस्से में जाते हैं, तो वहाँ के प्रसिद्ध देवालयों में दर्शन–पूजन अवश्य करते हैं, अथवा उनका पुण्य स्मरण करते हैं। पिछले वर्ष नवरात्रि में शक्ति पीठ अंबाजी मंदिर में उन्होंने दर्शन–पूजन करते हुए कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया। देश ने विगत 10 सालों में अनेक

ऐसे अवसर देखे हैं। पिछले लोकसभा चुनाव के प्रचार अभियान से पहले मोदी जी ने माता वैष्णो देवी के दर्शन किये, तो चुनाव समाप्त होते ही एक दिन के लिए केदारनाथ स्थित गुफा में ध्यान किया। इस वर्ष भी तमिलनाडु के कन्याकुमारी में प्रसिद्ध विवेकानंद रॉक मेमोरियल में चुनाव के बाद प्रधानमंत्री ने 45 घंटे के लिये ध्यान–साधना की।

यह नरेंद्र मोदी की ही प्रेरणा है कि राज्य सरकारों ने भी देवालयों पर विशेष ध्यान देना शुरू किया है। उत्तर प्रदेश का मथुरा, विन्ध्याचल, प्रयागराज हो या मध्यप्रदेश का उज्जैन हो, अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ आधुनिक सुविधाओं से लैस विकास कार्य हुए हैं। प्रधानमंत्री द्वारा उज्जैन की पावन धरा पर महाकाल लोक के नये कॉरीडोर तथा अन्य लोकमुखी सुविधाओं का उद्घाटन भी इस कड़ी में एक ऐतिहासिक पड़ाव है, जहाँ से भारत के आध्यात्मिक, साँस्कृतिक, धार्मिक पुनरुत्थान का नया अध्याय प्रारंभ होगा। महाकाल की नगरी विश्व भर में विशेष धार्मिक महत्व रखती है, जहाँ प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु आते हैं। उज्जैन में राज्य सरकार द्वारा किया गया नवनिर्माण और उसका नामकरण हमारी आध्यात्मिक यात्रा में नया अध्याय जोड़ेगा। वस्तुतः भारतीय सँस्कृति का आधार आदर्श आध्यात्मिकता है। यही वह धुरी है, जिससे भारत में व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन और आर्थिक जीवन के मध्य सदियों से सामंजस्य रहा है। हमारे शक्तिपीठों, मंदिरों, पुण्यस्थलों की साँस्कृतिक विरासत पर नरेंद्र मोदी की गहनदृष्टि से विगत 70 साल से जमी धूल हट रही है और भारत को उसकी प्राणशक्ति की ओर ले जा रही है। इस शक्ति की जागृति से भारत की साँस्कृतिक अस्मिता का पुनर्जागरण संभव हो रहा है और विश्व कल्याण में आध्यात्मिक अभ्युदय का नया दौर शुरु हुआ। इस दौर का जब भी इतिहास लिखा जाएगा, तब नरेंद्र मोदी द्वारा भारत के आध्यात्मिक पुनरुत्थान का योगदान स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा।

हमारे ऋषियों ने उपनिषदों में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय' की प्रार्थना की है। यानी हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। परेशानियों से अमृत की ओर बढ़ें। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता। इसलिए अमृतकाल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। हमें अपनी सँस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने सँस्कारों को जीवंत रखना है। अपनी आध्यात्मिकता को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है और साथ ही टेक्नोलॉजी, इंफ्रास्ट्रक्चर, एजुकेशन, हेल्थ की व्यवस्थाओं को निरंतर आधुनिक भी बनाना है।

प्रख्यात कवि भीम भोई जी की कविता की एक पंक्ति है– *'मो जीवन पछे नर्के पड़ी थाउ, जगत उद्धार हेउ"।'* अर्थात् अपने जीवन के हित– अहित से बड़ा जगत कल्याण के लिए कार्य करना होता है। जगत कल्याण की इसी भावना के साथ हमारा कर्तव्य है कि हम सभी को पूरी निष्ठा व लगन के साथ काम करना होगा। हम सभी एकजुट होकर समर्पित भाव से कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ेंगे, तभी वैभवशाली और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा।

श्रीराम जन्मभूमि, अयोध्या में श्रीराम दरबार सहित सभी देवविग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा

अयोध्या, 5 जून। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में गंगा दशहरा के पावन पर्व पर अभिजित मुहूर्त में श्रीराम दरबार के साथ मन्दिर परिसर के सभी नवनिर्मित देवालयों में एक साथ सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ प्राण प्रतिष्ठा हुई। त्रिदिवसीय समारोह के अंतिम दिन प्रातः साढ़े छह बजे से आह्वानित देवताओं का यज्ञमंडप में पूजन प्रारम्भ हुआ, जो दो घंटे चला। इसके पश्चात नौ बजे से हवन शुरू हुआ, जो घंटे भर चला। बाद में केंद्रीयकृत व्यवस्था के अंतर्गत एक साथ सभी देवालयों में प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। सभी मन्दिरों को दृश्य माध्यम (कैमरा एवं स्क्रीन) से एक साथ जोड़ा गया था। श्रीराम दरबार और शेषावतार के साथ जिन मन्दिरों में प्राण प्रतिष्ठा हुई वे हैं, परकोटा के ईशान कोण पर स्थित शिव मंदिर, अग्निकोण में गणेशजी, दक्षिणी भुजा के

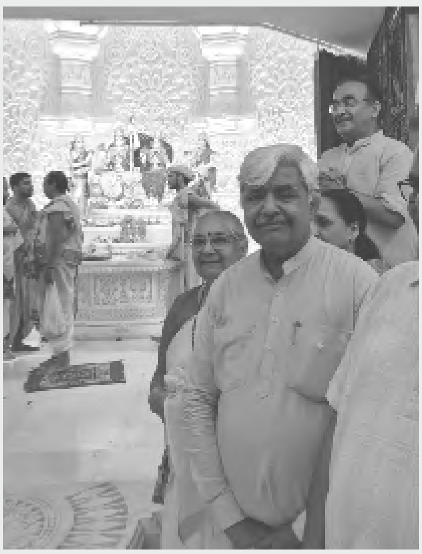

मध्य में हनुमानजी, नैऋत्य कोण में सूर्य, वायव्य कोण में माँ भगवती के साथ परकोटा की उत्तरी भुजा के मध्य में अन्नपूर्णा माता प्रतिष्ठित हुईं। उपरोक्त जानकारी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र संवाद केन्द्र अयोध्या धाम से प्राप्त हुई।

ज्ञात हो कि प्राण प्रतिष्ठा के ही दिन उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का जन्मदिवस भी था। प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात वहाँ उनका जन्मदिन भी मनाया गया। वहाँ उनको 53 किलो घी का लड्डू भेंट किया गया, उनका माल्यार्पण किया गया, रामलला की रामदरबार की मूर्ति के मूर्तिकार सत्यनारायण पाण्डेय के द्वारा भेंट दिया गया। इन सभी कार्यक्रमों में विहिप के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के कोषाध्यक्ष स्वामी गोविन्द देव गिरी जी महाराज, केन्द्रीय महामंत्री बजरंग बागड़ा जी, विहिप के केन्द्रीय पालक दिनेशचन्द्र जी, श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री व विहिप के उपाध्यक्ष चम्पत राय जी, केन्द्रीय मंत्री राजेन्द्र सिंह पंकज जी, कृषि मंत्री उत्तरप्रदेश सरकार एवं अयोध्या के प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही उपस्थित रहे।

भारत की कूटनीति से
60 साल बाद मॉरीशस को मिला चागोस द्वीपसमूह

संजय सक्सेना

चागोस द्वीपसमूह पर ब्रिटेन के 60 साल पुराने कब्जे का अंत एक ऐसे ऐतिहासिक क्षण के रूप में दर्ज हुआ है, जिसने औपनिवेशिक शासन की उन स्याह परतों को मिटा दिया है, जो आजादी के इतने वर्षों बाद भी विश्व के कई हिस्सों पर छाई हुई थीं। 22 मई 2025 को ब्रिटेन और मॉरीशस के प्रधानमंत्रियों कीर स्टार्मर और नवीन रामगुलाम ने एक डिजिटल समारोह में उस समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे चागोस द्वीपसमूह, जिसमें डिएगो गार्सिया जैसे रणनीतिक और सैन्य दृष्टिकोण से अहम ठिकाने शामिल हैं, आधिकारिक तौर पर मॉरीशस को सौंप दिए गए। इस सौदे के पीछे एक और नाम बिना किसी शोरगुल के खड़ा रहा भारत। खासतौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भूमिका इस पूरे कूटनीतिक घटनाक्रम में बेहद अहम और निर्णायक रही, हालांकि वह हमेशा पर्दे के पीछे ही रहे।

चागोस द्वीपसमूह की कहानी केवल भूगोल या रणनीति की नहीं, बल्कि न्याय, संप्रभुता और आत्मसम्मान की भी है। 1965 में जब मॉरीशस को ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिलने वाली थी, ठीक उसी वक्त ब्रिटेन ने इस द्वीपसमूह को मॉरीशस से अलग कर लिया और अपने अधीन रखा। इसके बाद हजारों स्थानीय निवासियों को जबरन उनके घरों से बेदखल किया गया और डिएगो गार्सिया द्वीप पर अमेरिका के लिए एक विशाल सैन्य अड्डा बनाया गया, जो आज भी अमेरिका के वैश्विक रणनीतिक ढांचे का अहम हिस्सा है। तब से मॉरीशस इस जमीन की वापसी की लड़ाई लड़ रहा था, जो अब जाकर सफल हुई है।

इस समझौते के तहत ब्रिटेन ने द्वीपसमूह की संप्रभुता मॉरीशस को लौटा दी है, लेकिन डिएगो गार्सिया को ब्रिटेन 99 साल की लीज पर अमेरिका के साथ मिलकर इस्तेमाल करता रहेगा। इसके बदले मॉरीशस को हर साल लगभग 101 मिलियन पाउंड की राशि दी जाएगी। यह व्यवस्था उस सैन्य संतुलन को भी बनाए रखेगी, जो हिंद महासागर में अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए रणनीतिक दृष्टि से जरूरी माना जाता है। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा पहलू यह है कि आखिरकार उपनिवेशवाद के एक गहरे जख्म पर मरहम लगाया गया है।

मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीन रामगुलाम ने डिजिटल समारोह में कहा कि भारत की लगातार कूटनीतिक सहायता और भरोसे ने इस संघर्ष को मुकाम तक पहुँचाया। उनके अनुसार चागोस की वापसी केवल भूभाग की वापसी नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान की वापसी है और इसमें भारत की भूमिका अमूल्य रही। भारत के विदेश मंत्रालय ने इस समझौते को 'एक ऐतिहासिक समाधान' करार दिया और कहा कि यह हिंद महासागर क्षेत्र में स्थायित्व, सहयोग और शांति के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

यह समझौता यूं ही नहीं हुआ। इसके पीछे कई सालों की बातचीत, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हुई बहसें और चुपचाप की गई कूटनीति शामिल है। भारत की भूमिका यहाँ खासतौर पर ध्यान देने योग्य है। 2019 में जब अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने इस पूरे विवाद पर अपनी परामर्शी राय दी और ब्रिटेन के कब्जे को गैरकानूनी ठहराया, तब से लेकर अब तक भारत ने लगातार मॉरीशस के दावे का समर्थन किया। चाहे वह संयुक्त राष्ट्र महासभा में हो, या हिंद महासागर के देशों के समूहों में भारत ने हर स्तर पर यह स्पष्ट किया कि चागोस मॉरीशस का अभिन्न अंग है और इसकी वापसी केवल समय की बात है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पूरे मामले को केवल एक सहयोगी देश की

मदद के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे 'ग्लोबल साउथ' यानी वैश्विक दक्षिण के देशों की आवाज को मजबूत करने और औपनिवेशिक इतिहास के खिलाफ एक नैतिक पहल के रूप में लिया। यही कारण है कि इस पूरे घटनाक्रम में भारत की भूमिका तो रही, लेकिन प्रचार या राजनीतिक लाभ की कोई होड़ नहीं देखी गई। भारत ने न तो कोई बड़ा आधिकारिक बयान जारी किया और न ही इसे अपनी कूटनीतिक जीत के तौर पर पेश किया। लेकिन मॉरीशस ने इस सहयोग को पूरे दिल से स्वीकारा और खुले तौर पर प्रधानमंत्री मोदी का नाम लेकर धन्यवाद दिया।

मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीन रामगुलाम ने डिजिटल समारोह में कहा कि भारत की लगातार कूटनीतिक सहायता और भरोसे ने इस संघर्ष को मुकाम तक पहुँचाया। उनके अनुसार चागोस की वापसी केवल भूभाग की वापसी नहीं, बल्कि आत्म–सम्मान की वापसी है और इसमें भारत की भूमिका अमूल्य रही। भारत के विदेश मंत्रालय ने इस समझौते को 'एक ऐतिहासिक समाधान' करार दिया और कहा कि यह हिंद महासागर क्षेत्र में स्थायित्व, सहयोग और शांति के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

इस समझौते के रास्ते में एक छोटा लेकिन संवेदनशील मोड़ भी आया, जब चागोस द्वीपसमूह की एक महिला नागरिक बर्ट्रिस पोप ने ब्रिटिश अदालत में याचिका दायर की कि यदि द्वीप मॉरीशस को सौंप दिए गए, तो उन्हें वहाँ लौटने की अनुमति शायद न मिले। इस पर अदालत ने कुछ समय के लिए सौदे पर अस्थायी रोक लगा दी। लेकिन बाद में सुनवाई पूरी होने के बाद यह रोक हटा ली गई और समझौते पर अंततः हस्ताक्षर हो गए।

डिएगो गार्सिया द्वीप की बात करें तो यह अमेरिकी सेनाओं के लिए एक बेहद अहम ठिकाना है, खासकर अफगानिस्तान, ईरान और चीन की निगरानी के लिहाज से। इसलिए यह सौदा केवल ऐतिहासिक या भावनात्मक नहीं था, बल्कि इसमें रणनीतिक और सुरक्षा की भी कई परतें शामिल थीं। यही कारण है कि इसमें संतुलन साधना बेहद जरूरी था और भारत ने इसमें बड़ी भूमिका निभाई। यह सौदा 'न्यू वर्ल्ड ऑर्डर' यानी नए वैश्विक व्यवस्था की एक झलक भी देता है। आज जब पश्चिमी ताकतें अपने पुराने औपनिवेशिक पदचिह्नों को मिटा रही हैं, तब भारत जैसे देश सामने आकर न केवल साझेदारी निभा रहे हैं, बल्कि न्याय और नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर अपनी भूमिका तय कर रहे हैं। यह केवल भूगोल का नहीं, वैश्विक मानसिकता का भी परिवर्तन है।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि न्याय भले देर से मिले, लेकिन वह संभव है, बशर्ते उसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, निरंतर कूटनीतिक प्रयास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग हो। चागोस की वापसी न केवल मॉरीशस की जीत है, बल्कि यह उन लाखों लोगों के लिए भी एक आशा की किरण है, जिनकी जमीनें, पहचान और अधिकार औपनिवेशिक साजिशों के चलते उनसे छीन लिए गए थे।

भारत के लिए यह एक अवसर भी है और एक जिम्मेदारी भी। अवसर इसलिए कि हिंद महासागर में उसका प्रभाव और अधिक स्थिर और स्वीकार्य हुआ है। जिम्मेदारी इसलिए कि अब जब भारत 'ग्लोबल साउथ' की आवाज बनना चाहता है, तो उसे आगे भी ऐसे ही मुद्दों पर न्याय और नैतिकता के पक्ष में खड़े रहना होगा, चाहे वह अफ्रीका के किसी छोटे देश की बात हो या दक्षिण एशिया के किसी द्वीप राष्ट्र की। चागोस द्वीपसमूह की वापसी कोई साधारण घटना नहीं है। यह इतिहास का वह मोड़ है, जहाँ उपनिवेशवाद का एक दरवाजा बंद हुआ और वैश्विक न्याय का एक नया अध्याय शुरू हुआ। इस जीत में भारत की भूमिका एक मौन लेकिन मजबूत नींव की तरह रही और यह दिखाता है कि सच्ची कूटनीति हमेशा शोर नहीं मचाती, लेकिन इतिहास जरूर बदल देती है।

skslko28@gmail.com

मुंगेर विभाग व भागलपुर विभाग का दुर्गावाहिनी का तीन दिवसीय अभ्यास वर्ग आयोजित

दक्षिण बिहार। मुंगेर तथा भागलपुर विभाग के दुर्गावाहिनी के तीन दिवसीय अभ्यास वर्ग का आयोजन मुंगेर में किया गया। इस वर्ग में मुंगेर तथा भागलपुर विभाग की 15 से 35 आयु वर्ग की 70 बहनों ने भाग लिया। बहनों ने दंड, नियुद्ध, लक्ष्यभेद सहित अनेक विषयों का प्रशिक्षण लिया।

पटना क्षेत्र की मातृशक्ति संयोजिका डॉ. शोभारानी सिंह, प्रांत उपाध्यक्ष परशुराम जी ने दुर्गावाहिनी का परिचय व संघर्षों के इतिहास पर सभी बहनों का मार्गदर्शन किया। समापन अवसर पर प्रकट कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ।

chitranjan1964@gmail.com

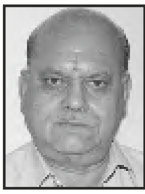

अजय कुमार

राष्ट्रवाद के दौर में राहुल की जातिवादी राजनीति

बिहार की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर रही है और इस दौर के केंद्र में इस बार राहुल गाँधी हैं। जब पूरा देश 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद राष्ट्रवाद की राजनीति की ओर फिर से झुक गया, राहुल गाँधी ने इसके ठीक उलट जातीय जनगणना और सामाजिक न्याय को अपनी राजनीतिक प्राथमिकता बना लिया है। यह वही बिहार है, जिसने कभी मंडल राजनीति की नींव रखी थी और जहाँ जातीय समीकरण अब भी हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। ऐसे में राहुल गाँधी का यह फोकस न केवल एक रणनीतिक चुनावी दांव है, बल्कि यह संकेत भी है कि काँग्रेस अब केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर नहीं, बल्कि क्षेत्रीय राजनीति की नब्ज पर भी हाथ रखना चाहती है।

बीते पाँच महीनों में राहुल गाँधी बिहार के चार दौरे कर चुके हैं और हर बार उन्होंने अलग–अलग जिलों को चुना है। यह चयन यूं ही नहीं है, बल्कि हर दौरे के पीछे सामाजिक समूहों की स्पष्ट गणना है। दरभंगा में उन्होंने दलित छात्रों से मिलने की कोशिश की, लेकिन प्रशासन ने उन्हें अंबेडकर छात्रावास में जाने की अनुमति नहीं दी। इसके बावजूद राहुल गाँधी ने हार नहीं मानी। उन्होंने पदयात्रा शुरू की, पुलिस और प्रशासनिक अफसरों से बहस की और आखिरकार टाउन हॉल में शिक्षा न्याय संवाद के जरिए अपनी बात रखी। यह कोई साधारण राजनीतिक दौरा नहीं था, बल्कि प्रतीकों से भरा हुआ एक बड़ा संदेश था।

राहुल गाँधी ने दरभंगा में छात्रों से कहा कि देश की 90 फीसदी आबादी के पास कोई अवसर नहीं है। उन्होंने पूछा कि उच्च नौकरशाही में आपके कितने लोग हैं? डॉक्टरी पेशे में आपके कितने लोग हैं? शिक्षा व्यवस्था में आपके कितने लोग हैं? और फिर खुद ही जवाब दिया 'जीरो'। उन्होंने आगे कहा कि मनरेगा की सूची में मजदूरों की सँख्या देखिए, वह 90 प्रतिशत आबादी से ही भरी हुई है, लेकिन जब बात सत्ता, संपत्ति और ठेकेदारी की आती है, तो सारा पैसा केवल 8 से 10 प्रतिशत लोगों के पास पहुँच जाता है। राहुल गाँधी ने इसे लोकतंत्र की सबसे बड़ी विफलता बताया और कहा कि जब तक सामाजिक रूप से वंचित वर्ग एकजुट नहीं होंगे, तब तक कोई बदलाव संभव नहीं है।

राहुल गाँधी की यह बात बिहार जैसे राज्य में खास असर डाल सकती है, जहाँ जातीय आधार पर लोगों की पहचान और उनकी सामाजिक स्थिति गहराई से जुड़ी हुई है। खास बात यह भी है कि राहुल गाँधी केवल भाषणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने दलित समाज के साथ वक्त बिताने और उनकी सँस्कृति को समझने का प्रयास किया है। पटना के एक मॉल में उन्होंने दलित समाज के लोगों के साथ 'फुले' फिल्म देखी, जो सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा फुले के जीवन पर आधारित है। यह एक संदेश था कि काँग्रेस अब दलित राजनीति को केवल चुनावी गणित नहीं, बल्कि वैचारिक जिम्मेदारी मान रही है।

हालांकि राहुल गाँधी का यह अभियान राजनीतिक टकराव से अछूता नहीं रहा। दरभंगा दौरे के दौरान पुलिस प्रशासन ने उन्हें छात्रावास में प्रवेश करने से रोका, जिसे काँग्रेस ने दलितों से संवाद रोकने की साजिश करार दिया। प्रियंका वाड्रा ने सोशल मीडिया पर इसे दलित विरोधी रवैया बताते हुए बिहार सरकार पर हमला किया और लिखा कि अगर एक नेता दलित छात्रों से मिलना चाहता है, तो उसमें क्या गलत है? दूसरी ओर प्रशासन का कहना है कि भारत में कहीं भी छात्रावासों में राजनीतिक कार्यक्रम की अनुमति नहीं दी जाती, इसलिए उन्हें टाउन हॉल में अनुमति दी गई थी।

बिहार में काँग्रेस की यह सक्रियता महज भाजपा के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह सहयोगी दल आरजेडी के लिए भी चुनौती बनती जा रही है। वस्तुतः जिस प्रकार से राहुल गाँधी सीधे तौर पर दलित–पिछड़े वर्ग को संबोधित कर रहे हैं, उससे आरजेडी का परंपरागत वोट बैंक खिसक सकता है। यही कारण है कि कुछ राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि बिहार में काँग्रेस अब आरजेडी को भी राजनीतिक रूप से प्रतिद्वंद्वी मानने लगी है। ठीक वैसे ही जैसे दिल्ली में काँग्रेस ने आम आदमी पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोला, बिहार में आरजेडी पर काँग्रेस की निगाह टिकी है।

मैं हिन्दू मैं श्रेष्ठ हूँ, सब धर्मों में ज्येष्ठ हूँ

– वनीत विश्नोई

मैं हिन्दू मैं श्रेष्ठ हूँ
सब धर्मों में ज्येष्ठ हूँ।
गंगा यमुना और सरस्वती
कण कण में है नीर बरसती।
मेरे ग्रंथ वेदों का ज्ञान
लेकर बना है विश्व विद्वान
परम्परा में है विज्ञान
संस्कृति मेरी बड़ी महान।
दुनिया करें गुण ज्ञान जिसका
वो मैं इतिहास हूँ।
मैं हिन्दू मैं श्रेष्ठ हूँ,
सब धर्मों में ज्येष्ठ हूँ।।

सिख बौध जैन वैष्णव
मेर पंथ निराले
जीना है तो कैसे जीना
सीखें इनसे दुनिया वाले।

शल्य चिकित्सा आयुर्वेद
सब रोगों का इसमें भेद
ऋषि का ज्ञान गुरु की वाणी
सुनकर होता धन्य प्राणी।
मैं हिन्दू मैं श्रेष्ठ हूँ,
सब धर्मों में ज्येष्ठ हूँ।।

सतयुग द्वापर त्रेता कलयुग
सनातन हूँ कहता हर युग
था मेरे ग्रन्थों का ज्ञान
जिससे बना पुष्पक विमान
रामायण गीता की गाथाएँ
सदभावों की देती शिक्षाएँ
प्रकृति पूजन धर्म धारी
आर्य मेरे हैं पुजारी
मैं हिन्दू मैं श्रेष्ठ हूँ,
सब धर्मों में ज्येष्ठ हूँ।।

लोकसभा चुनाव 2024 में काँग्रेस और आरजेडी की स्थिति लगभग बराबर रही, लेकिन यह बराबरी कई समीकरणों पर आधारित थी, जैसे पप्पू यादव का काँग्रेस के समर्थन में खड़ा होना। अब जब विधानसभा चुनाव नजदीक हैं, काँग्रेस शायद खुद को आरजेडी की छाया से निकालकर स्वतंत्र ताकत के रूप में स्थापित करना चाहती है। यही वजह है कि राहुल गाँधी के कार्यक्रमों में जातिगत न्याय, सामाजिक प्रतिनिधित्व, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे बार–बार सामने आते हैं, जो कि आरजेडी की पारंपरिक राजनीति का मूल आधार रहे हैं।

राहुल गाँधी लगातार यह भी कहते रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार जातिगत जनगणना को लेकर दबाव में आई और उन्हें अंततः इसे स्वीकार करना पड़ा। काँग्रेस इसे अपनी जीत के रूप में प्रचारित कर रही है और राहुल गाँधी बार–बार दोहरा रहे हैं कि जब तक समाज की सही तस्वीर हमारे पास नहीं होगी, तब तक न्याय संभव नहीं है। यही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि निजी संस्थानों में आरक्षण लागू किया जाना चाहिए और एससी–एसटी सब–प्लान का बजट पारदर्शी ढंग से लागू हो।

भाजपा की रणनीति इस पूरे परिदृश्य में अलग है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रवाद की भावना को फिर से जगाने की कोशिश की जा रही है। इसका असर भी दिखा है, लेकिन बिहार में राहुल गाँधी की जातीय राजनीति के सामने भाजपा को भी अब जवाब देना पड़ रहा है। भाजपा नेता बार–बार यह कह रहे हैं कि जातीय जनगणना का क्रेडिट काँग्रेस नहीं ले सकती, क्योंकि इसे लागू करने का फैसला तो एनडीए सरकार ने किया है। फिर भी राहुल गाँधी लगातार इसे अपनी उपलब्धि के रूप में जनता के सामने रख रहे हैं।

यह दिलचस्प है कि जब राहुल गाँधी को दरभंगा में छात्रों से मिलने से रोका गया, उन्होंने इसे उसी तरह से प्रचारित किया, जैसे उन्होंने लोकसभा में बोलने न दिए जाने की घटनाओं को किया था। उनका यह तरीका विपक्ष को एक पीड़ित की तरह पेश करने का है, जो कि सत्ताधारी दल के अहंकार और तानाशाही के खिलाफ लड़ा जा रहा है। यह छवि जनता के बीच एक भावनात्मक जुड़ाव पैदा करती है, खासकर तब जब मुद्दा दलित या पिछड़े वर्ग से जुड़ा हो।

कुल मिलाकर राहुल गाँधी ने बिहार चुनावों के लिए एक ऐसी पिच तैयार की है, जो अब तक भाजपा और राजग दोनों से अलग है। वह खुद को सामाजिक न्याय के एक नए प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं और इसमें उन्हें सीमित सफलता भी मिलती दिख रही है। अब यह देखना होगा कि बिहार की जनता इस नई काँग्रेस को कितनी गंभीरता से लेती है। क्या राहुल गाँधी का जातीय न्याय का एजेंडा चुनाव में निर्णायक साबित होगा ? क्या काँग्रेस आरजेडी को पछाड़कर प्रमुख विपक्ष बन पाएगी ? और सबसे बड़ा सवाल, क्या राहुल गाँधी के नेतृत्व में काँग्रेस वह जनाधार फिर से हासिल कर पाएगी, जो कभी उसका हुआ करता था ?

बिहार की राजनीतिक बिसात पर बिछी यह चालें आने वाले दिनों में और रोचक मोड़ लेंगी, लेकिन इतना तय है कि राहुल गाँधी ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि वह सिर्फ संसद तक सीमित नेता नहीं, बल्कि जमीनी संघर्ष करने वाले राजनीतिक खिलाड़ी भी हैं। उनकी यह कोशिश, चाहे सफल हो या असफल, भारतीय राजनीति में एक नई बहस को जन्म दे चुकी एक ऐसी बहस, जो सामाजिक न्याय को फिर से केंद्रीय मुद्दा बना रही है।

ajaimayanews@gmail.com

शहतूत का फल है गुणकारी

शहतूत के फल जितने गुणकारी होते हैं, उससे कहीं ज्यादा असरदार इसकी पत्तियाँ होती हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि इसकी पत्तियाँ हार्ट की समस्याओं से लेकर ब्लडप्रेशर, डायबिटीज और कई लाइफस्टाइल रिलेटेड डिसऑर्डर्स में लाभदायक है। बात शुरू करता हूँ कई साल पहले अपनी चीन यात्रा से। हुआ वस्तुतः ये कि 'वर्ल्ड बायोडायवर्सिटी समिट' के लिए में चीन जाना हुआ और अपना प्रेजेंटेशन देने के बाद मैंने बाकी अन्य मीटिंग्स को गच्चा देकर बाहर तफरी मारने चल दिया। सड़कों पर आवारापन करते हुए मुझे एक बुजुर्ग दंपत्ति का टी स्टाल दिखा, स्वभावतः बुजुर्गों से बातचीत करने और कुछ सीखने में उनके स्टोर पर थम गया। वहाँ दुनिया भर के टीमटाम की चायें मिल रही थी। किसी एक स्पेशल चाय के बारे में पूछने पर बुजुर्ग ने बताया कि 'मलबेरी टी' चखना चाहिए। मलबेरी यानी शहतूत। यहाँ शहतूत के फलों और पत्तियों की चाय उपलब्ध थी, मैंने ट्राय किया और चखते ही एकदम सनसना गया, एकदम सॉलिड टेस्ट। चुस्कियाँ मारते–मारते इस चाय की खूबियों के बारे में बुजुर्ग से जो जानकारी मिली, वो हैरान करने वाली थी। उन्होंने बताया कि नजदीकी मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल में इस चाय की गजब खपत है, डॉक्टर्स अपने मरीजों को दिन में कम से कम 2 बार इस चाय को पिलाते हैं। चीन में पारंपरिक तौर से इस चाय का उपयोग कैंसर, डायबिटीज, हार्ट जैसी समस्याओं में खूब किया जाता है।

अब आपके दोस्त दीपक आचार्य का देसी अनुभव भी जानिये, इत्ता तो बनता ही है। डांग (गुजरात) में हर्बल इनसाइक्लोपीडिया के जानकार स्वर्गीय जानू दादा को डॉक्यूमेंट करने और उनके साथ फील्ड पर काम करने का एक लंबा अनुभव मिला है मुझे। कई सालों पहले यानी करीब 2006–07 में उन्होंने लिवर में सूजन और शुगर के रोगियों के लिए शेतुर (शहतूत का गुजराती नाम) की पत्तियों का रस देने की बात बतायी थी। उस वक्त दादा की उम्र करीब 88 साल थी। पूजनीय जानू दादा के इस अनुभव को जब मैंनें आधुनिक रिसर्च पेपर्स के जरिये क्रॉस चेक किया, तो चौंक गया। कई टेस्ट ट्यूब स्टडीज बताती हैं कि पत्तियों का एक्सट्रेक्ट लिवर में फैट फॉर्मेशन को कम करता है, यानी फैटी लिवर को दुरुस्त करता है। जानू दादा का एक्सपीरियंस यकीनन इन एक्सपेरिमेंट्स से ज्यादा सॉलिड था।

चीन वाले अनुभव के बाद खूब सारे रिसर्च पेपर्स खंगाला, कई एनिमल स्टडिज पढ़ी और जानकारी मिली कि शहतूत की पत्तियां कोलेस्ट्रॉल मैनेजमेंट में इफेक्टिव हैं। एक जबरदस्त कंपाउंड पाया जाता है शहतूत के फलों और पत्तियों में DNJ (1–डिओक्सीनॉजिरीमायसिन) जो भोजन करने के बाद बढ़े शुगर को डाउन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किलो भर के रिसर्च पेपर्स मिल जाएंगे, जो शहतूत की पत्तियों और फलों के एंटीडायबेटिक गुणों के क्लीनिकल प्रमाण देते हैं। जिन्हें मेरी जानकारी हल्की लग रही हो, उनसे एक किनारे में निपट सकता हूँ, आ जाएँ। अपनी जानकारियों को खंगाल और परखकर ही पटकता हूँ, याद रहे।

अब करना क्या है ? शहतूत के फल मार्च से मई तक पेड़ पर लदे रहते हैं, खूब खाएँ। इनमें गुलाबी, बैंगनी, काला और लाल रंग एंथोसायनिन पिगमेंट्स पाए जाने के कारण होता है। ये पिग्मेंट एंटीकैंसर होते हैं। डायबिटीज और फैटी लिवर के लिए भी उत्तम हैं और तो और हार्ट और हाई बीपी के पेशेंट्स भी इसे कॉन्ज्यूम कर सकते हैं, जितना मन करे खाएँ, सिर्फ 3 महीनों की ही तो मौज है जी। वैसे, पत्तियाँ पेड़ पर सालभर मिलती हैं, रोज 5–5 पत्तियों को साफ धोकर, कुचलकर रस निकालकर दोनों टाइम भोजन के बाद लें, क्या पता चमत्कारिक परिणाम मिले। आजमाकर देखें, जमे तो ठीक, वरना कौन सा मैं खड़ा हूँ डंडा लेकर।

(भारतीय धरोहर से साभार)

भोजपुर (बिहार) में बजरंग दल का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

भोजपुर। 30 मई, 2025। जिला अंतर्गत बाम्पली सरस्वती विद्या मंदिर में बजरंग दल के प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय प्रबन्ध समिति के सदस्य जीवेश्वर मिश्र जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा शारीरिक प्रदर्शन भी किया गया, जिसमें दंड, नियुद्ध, सामूहिक सूर्य नमस्कार, योग, एस टी, बाधा, लक्ष्यभेद आदि मुख्य था। बजरंग दल के प्रांत सँयोजक श्री रजनीश जी ने वर्ग की भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय प्रबन्ध समिति के सदस्य माननीय जीवेश्वर मिश्रा जी ने कहा कि हिंदू सँस्कृति देश की प्राण है। किसी भी देश की सँस्कृति ही तय करती है कि उसे किस दिशा में और कितना आगे बढ़ना है। हिंदू सँस्कृति विश्व की पुरातन सँस्कृतियों में से एक है। दुनिया में कई सँस्कृति जन्म लीं और समाप्त भी हो गईं, लेकिन इस देश की सँस्कृति में कुछ विशेष बातें हैं, जिसके कारण से यह अमर है। इतने संघर्ष व बलिदान के बाद भी गिरावट नहीं, बल्कि निखार आया है। बच्चे के जन्म लेने से लेकर मृत्यु तक के कई सँस्कार हमारे यहाँ वर्णित हैं। हमारे पर्व उत्सव में भी कई वैज्ञानिकता देखने को मिल जाएगी, जो सृष्टि, पर्यावरण में सामंजस्य को स्थापित करती है। हमने वृक्ष, नदी, पहाड़ और जीवों को भी देवी/देवता माना है। इस कारण इन सबको सँरक्षण दिया, इनकी शुद्धता बनाए रखने में हमारी साँस्कृतिक परंपरा ने काफी योगदान दिया है। इस प्रकार से सामाजिक समरसता तथा कुटुंब प्रबोधन के भाव को भी पुष्ट करने वाली हमारी सँस्कृति ही है। एकल परिवार यह हमारा विधान नहीं है, भारतीय विधान तो सँयुक्त परिवार ही है, जहाँ बच्चे अपने चाचा—चाची, मौसा—मौसी, मामा—मामी, दादा—दादी के सँस्कारों से पल—बढ़कर तैयार होते हैं, तथा देश के विकास में अपना अहम योगदान करते हैं। देश के कई महापुरुषों ने इस गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कार्यक्रम के अंत में भोजपुर जिला के अध्यक्ष राजीव रंजन जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में अर्जुन प्रसाद, आदित्य विजय जैन, उपेन्द्र तिवारी, तारकेश्वर उपाध्याय, उपेन्द्र बजरंगी, साहिल सत्यम, अभिषेक चौरसिया, अमित पाण्डे, सोनू जी सहित अनेक प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।

गुवाहाटी क्षेत्र के धर्मप्रसार विभाग के धर्मरक्षकों का दो दिवसीय वर्ग

विश्व हिन्दू परिषद, गुवाहाटी क्षेत्र के धर्मप्रसार विभाग के धर्मरक्षकों का दो दिवसीय वर्ग सिलचर स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रान्त कार्यालय में मई 7, 8 तारीख को संपन्न हुआ। वर्ग में धर्मरक्षकों का मार्गदर्शन करने के लिए धर्म जागरण समन्वय विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख श्री शरद राव जी ढोले, विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मंत्री तथा धर्मप्रसार विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख श्री सुधांशु मोहन पटनायक तथा गुवाहाटी क्षेत्र धर्मप्रसार प्रमुख श्री पूर्ण चन्द्र मंडल उपस्थित थे।

वर्ग में त्रिपुरा से दो, उत्तर असम प्रान्त से सात और दक्षिण असम प्रान्त से पांच कार्यकर्ता उपस्थित रहे। चयनित जिला के चयनित प्रखण्ड में कार्य करने के लिए धर्मरक्षक का चयन किया जाता है और ऐसे प्रशिक्षण के बाद कार्यक्षेत्र में कार्य करने के लिए सुयोग दिया जाता है।

बकरीद के नाम पर हिंसा, क्रूरता व अवैध गतिविधियों पर लगे विराम : डॉ सुरेंद्र जैन

नई दिल्ली, 31 मई, 2025। विश्व हिंदू परिषद ने बक़रीद के नाम पर होने वाली हिंसा, क्रूरता व अवैध गतिविधियों पर विराम लगाने की मांग करते हुए कथित पर्यावरण प्रेमियों के साथ उसके पूरे ईको सिस्टम की इस मामले में चुप्पी पर भी गंभीर सवाल खड़े किए हैं। संगठन के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन ने मजहबी आधार पर लाखों पशुओं की निर्मम तरीके से तड़पा–तड़पा कर नृशंस हत्या को जस्टिफाई करने वालों से भी आज पूछा कि आखिर कौन सी कुरान में बकरीद पर बकरे की बलि का हवाला दिया गया है। यदि यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, तो इसके अन्य सात्विक व मानवीय विकल्प भी तो हैं, जिन्हें कुछ मुस्लिम लोगों के समूहों ने अपनाना प्रारंभ भी कर दिया है। इसके लिए आखिर लाखों निरीह जानवरों की जान क्यों ली जाती है और सात्विक समाज के मन मस्तिष्क को खराब क्यों किया जाता है ?

विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विनोद बंसल द्वारा जारी एक प्रेस वक्तव्य में उन्होंने आज कहा कि दिल्ली से लेकर मुंबई तक संपूर्ण देश में बकरीद की बर्बर परंपराओं को लेकर एक बेचैनी महसूस की जा रही है। संपूर्ण देश में दो करोड़ से अधिक मासूम प्राणियों के कत्ल होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। इस अमानवीय प्रथा को लेकर पूरा देश गुस्से में है।

इस दिन का दृश्यांकन करते हुए उन्होंने कहा कि हर बकरीद पर जहाँ–तहाँ खून बिखरा होता है, कई सड़कें खून से सनी होती है, कई जगह के सीवर खून और मांस बहाने की वजह से जाम हो जाते हैं, कई जगह नदियों में इतना खून बहता है कि उनका रंग ही बदल जाता है। शाकाहारी और संवेदनशील समाज त्राहि–त्राहि करने लग जाता है।

डॉ. जैन ने कहा कि दिवाली, होली आदि हिंदू त्योहारों पर तथाकथित पर्यावरण प्रेमी पत्रकार, बुद्धिजीवी हिंदुओं को सांकेतिक रूप में या इको फ्रेंडली होली, दिवाली मनाने का आह्वान करते हैं। कुछ जगह न्यायपालिका का एक वर्ग भी स्वतः संज्ञान लेकर उपदेशात्मक आदेश भी

ईद आजकल कुर्बानी के नाम पर क्रूर हिंसा का खुला प्रदर्शन और वहाँ के सभ्य समाज को आतंकित करने का एक माध्यम सा भी बन गई है।

देता देखा गया है। किंतु एक ही दिन में करोड़ों मासूम बकरों की क्रूर हत्या पर ये सभी कथित पर्यावरणविद् चुप्पी क्यों साध लेते हैं ? इसके कारण पूरे देश का शाकाहारी और संवेदनशील समाज गुस्से में है।

उन्होंने पूछा कि हिंदुओं को होली, दिवाली पर उपदेश देने वाले भला अभी तक इको फ्रेंडली बकरीद या अहिंसक सांकेतिक बकरीद का आह्वान क्यों नहीं कर पा रहे हैं ? ऐसा लगता है कि ये सभी लोग हिंदू विरोधी इको सिस्टम का हिस्सा हैं ! पर्यावरण की रक्षा केवल इनका एक बहाना है, इनका असली उद्देश्य तो सिर्फ हिंदुओं को अपमानित करना ही है।

डॉ. जैन ने चुनौती भरे लहजे में कहा कि बकरों की हत्या को कुछ लोग अपना कानूनी व धार्मिक अधिकार बताते हैं। मैं उनको चुनौती देता हूँ कि वह बताएँ कि कुरान के किस हिस्से में मासूम बकरों की कुर्बानी देने का आदेश दिया गया है। धार्मिक अधिकार के नाम पर मानवता को कैसे आतंकित किया जा सकता है?

उन्होंने यह भी कहा कि यह भारत के कानूनी और संवैधानिक प्रावधानों का भी उल्लंघन है। कुछ कट्टरपंथी संविधान का अनुच्छेद 25 के अंतर्गत मिले अधिकारों की बात तो करते हैं, लेकिन वे भूल जाते हैं कि यही प्रावधान सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य की रक्षा की बात भी करता है। बकरीद की परंपरा से इन तीनों का उल्लंघन किया जाता है। संविधान का अनुच्छेद 48 पशुओं के संरक्षण और पालन की बात करता है। गुजरात, मुम्बई, उत्तराखंड आदि कई उच्च न्यायालयों ने स्पष्ट रूप से सार्वजनिक स्थलों पर कुर्बानी को वर्जित भी किया है। इसलिए यह कहना कि यह उनका कानूनी और धार्मिक अधिकार है, यह पूर्ण रूप से गलत है।

ईद आजकल कुर्बानी के नाम पर क्रूर हिंसा का खुला प्रदर्शन और वहाँ के सभ्य समाज को आतंकित करने का एक माध्यम सा भी बन गई है। बाकी सब धर्म की परंपराओं में मानवीय जीवन मूल्यों को ध्यान में रखकर सुधार किए गए हैं। सभी सभ्य समाज कुर्बानी जैसी बर्बर परंपरा को छोड़ रहे हैं। जिस तरह की चुनौतियाँ कुछ मुस्लिम नेताओं द्वारा दी जा रही है, ऐसा लगता है कि वे संवेदनशील समाजों को आतंकित करना चाहते हैं। हिंदू समाज इन गीदड़ भभकियों से डरेगा नहीं और किसी भी सार्वजनिक स्थल पर मासूम जीवों की अवैध रूप से क्रूर हत्या नहीं होने देगा। हिंदू समाज अपनी भावनाओं व संविधान के प्रावधानों की सुरक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहा है। वह उम्मीद करता है कि मुस्लिम नेता और तथाकथित पर्यावरण प्रेमी भी सभ्य समाजों की भावनाओं का सम्मान करेंगे और सांकेतिक एवं अहिंसक ईद मनाने का आह्वान कर इस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

murari.shukla@gmail.com

दाहोद (गुजरात) में कर्णावती क्षेत्र के परिषद शिक्षा वर्ग में
प्रांतीय पदाधिकारियों तथा शिक्षार्थियों के साथ उपस्थित विहिप महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

जयपुर प्रांत के दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते विहिप-संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन, वर्ग में उपस्थित मंचस्थ राधेश्याम गौतम प्रांत मंत्री-विहिप जयपुर प्रांत, बाबू लाल जी-प्रांत प्रचारक जयपुर प्रांत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजेश्वरी सुथार प्रांत संयोजिका दुर्गावाहिनी जयपुर प्रांत, विवेक दिवाकर सह प्रांत मंत्री-विहिप जयपुर प्रांत, आशा बगड़िया सह प्रांत संयोजिका मातृशक्ति व नीता जी सहित प्रशिक्षार्थी

मध्यभारत प्रांत में धर्मरक्षकों के त्रिदिवसीय दक्षता वर्ग में उपस्थित विहिप केन्द्रीय मंत्री श्री सुधांशुमोहन पटनायक, प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से उत्तर कर्नाटक के अथनी में विविध जाति बिरादरी के समुदायों के पुजारियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुआ जिसमें 32 गाँवों के लोग सहभागी हुए।

जयपुर महानगर में चयनित प्रखंडों के धर्मरक्षकों के दो दिवसीय परिचय वर्ग का आयोजन

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516 / 98
प्रकाशन तिथि : 13.06.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी